मेरा राजस्थान

वर्ष-२०, अंक- ४, मुम्बई, जून २०२५ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४८ मूल्य -१००.०० रूपए प्रति

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

हम हैं माहेश्वरी हम हैं माहेश्वरी

महेश नवमी के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

युगांतर Exhibition #MakeADifference

YUGAANTAR EXHIBITION 2025

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Date: 12th & 13th July 2025 (Saturday & Sunday)

Venue: Royal Bengal Room, City Centre 1

Book Now & Secure Your Spot!

Nisha Laddha: 9830224300 | Varsha Mundhra: 9874272916

Remove India Name From the Constitution India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

http:// www.merarajasthan.co.in भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं

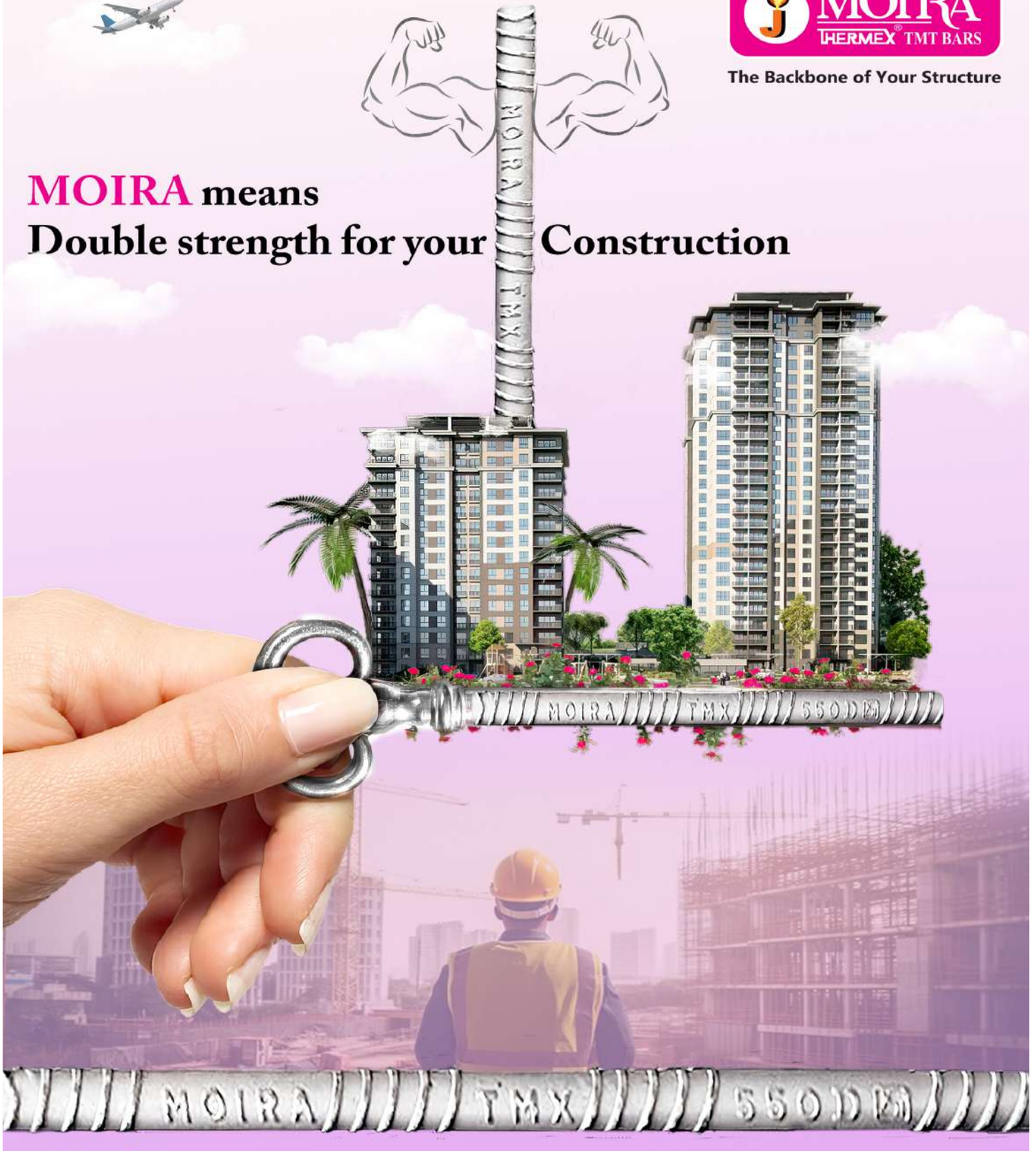

MOIRA THERMEX TMT BARS
The Backbone of Your Structure
MOIRA means
Double strength for your Construction
MOIRA TMX
MOIRA TMX 550D
Available In : Fe 550, Fe 550D, Fe 600 & CRS
JAIDEEP METALLICS
& Alloys Pvt. Ltd.
106 / 107 / 108, 1st Floor, Neha Ind. Estate, Behind CCI Ltd., Off Dattapada Road, Borivali (E),
Mumbai - 400 066. Phone : +91 2242032000 Fax : +91 22 42032020
Email : ajay@moiratmt.com | marketing@moirantmt.com

CHANDAK

PROMISES MADE.PROMISES KEPT.

Maharera Registration No. Chandak Sarvam: P51800078249 |
Chandak Highscape City: P51800055726 | 34PE: P51800006729 |
Chandak Treesourus: P51800048658 | Greenairy: P51800035093 |
Chandak Vansham: P51800080145 |
Available on https://maharera.mahaonline.gov.in
https://maharera.maharashtra.gov.in

CHANDAK SARVAM | CHANDAK HIGHSCAPE CITY | 34 PARK ESTATE | CHANDAK TREESOURUS | GREENAIRY | CHANDAK VANSHAM

Redefine luxury with Chandak Group's prestigious residential portfolio

Artist's impression

CHANDAK
HIGHSCAPE CITY
CHEMBUR (E)
NATURE-BLESSED 2 & 3 BHKs

— LAUNCHING SOON —
CHANDAK
vansham
VILE PARLE (W)
Balcony
3, 4 BHK & JODI RESIDENCES

CHANDAK
SARVAM
JB NAGAR, ANDHERI (E)
LUXURY 2, 3 & 4 BHK RESIDENCES

34 PARK ESTATE
GOREGAON (W)
EXCLUSIVE 1 BHK RESIDENCES

CHANDAK
TREESOURUS
MALAD (W)
2 & 3 BHK SUN-DECK RESIDENCES

LUXAIRY
COLLECTION
At Chandak GreenAiry
BORIVALI, WEH
2 BHK BALCONY RESIDENCES

UPCOMING PROJECTS

- BKC
- BANDRA (E)
- PALI HILL
- KALINA
- GOREGAON (W)
- BORIVALI (E)

76205 60000 | www.chandkgroup.com

Chandak Sarvam: The project is mortgaged in favour of IDBI Trusteeship Services Limited acting as a security trustee for Standard Chartered Bank.

34 Park Estate: Joint development with Reddy Builders and Developers ('Oregon Hills LLP' is a partner in Reddy Builders and Developers). The project is financed by ICICI Bank Limited.

Chandak Vansham: The project is mortgaged in favour of Arka Fincap Limited and IDBI Trusteeship Services Limited acting as security trustee for RBL Bank Limited.

Chandak Highscape City: The project is subject to the charge of Catalyst Trusteeship Limited and Tata Capital Housing Finance Limited. | **Chandak Treesourus:** The project is financed by ICICI Bank Limited.

Greenairy: The project is currently marketed as Luxairy Collection, exclusively for 40th floors and above. The Project is registered on MahaRERA as 'Greenairy'. The Project is mortgaged in favour of Piramal Trusteeship Services Private Limited for funding by Piramal Enterprises Limited and the buyer will be required to obtain a no objection certificate prior to entering into Agreement for Sale of any unit/flat in the project.

This communication is purely conceptual and not a legal offering, the information contained herein is only indicative in nature. All the images, views, surroundings, landscape, building elevation, height, design and/or any other details are artistic conceptualization for illustration purposes only and do not purport to replicate the offering. The project amenities and facilities are subject to final approval from the concerned authorities. The list of standard offerings, amenities and other details are available for verification at respective sites. Intending purchasers are requested to verify all the details before acting in any manner with respect to the projects.

०८ माहेश्वरियों का अति पवित्र दिन

१० शिव 'महेश' जी का परिचय

१२ माहेश्वरी समाज वंशोत्पत्ति

२६ माहेश्वरी प्रतीक चिन्ह

३६ माहेश्वरी परिवार की कुलदेवी

जून २०२५ के अंक की झलकियाँ

और भी बहुत कुछ....

'मेरा राजस्थान' जुलाई २०२५ री विशेषतावां

खींवसर

भारत का एक राज्य राजस्थान के नागौर जिले में एक कस्बा है 'खींवसर' जो किले के लिए जाना जाता है। 'खींवसर' का इतिहास नागौर और मारवाड़ से जुड़ा है, यहां मांगलिया राणाओं ने भी शासन किया है। विस्तृत जानकारी पढ़ें अगले 'मेरा राजस्थान' पत्रिका के विशेषांक में...

जायल

भारत का एक राज्य राजस्थान के नागौर जिले में 'जायल' तहसील एक शहर है, यह अजमेर संभाग के अंतर्गत आता है, यह जिला मुख्यालय नागौर से ५२ किलोमीटर पूर्व की ओर स्थित है, यह एक तहसील मुख्यालय है, विस्तृत जानकारी पढ़ें अगले 'मेरा राजस्थान' पत्रिका के विशेषांक में...

बुलडाणा अर्बन

को-ऑप. क्रेडिट सोसायटी लि., बुलडाणा मल्टिस्टेट रजि.नं. २६७

www.buldanaurban.in | buldanaurban@rediffmail.com

महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

☎:(07262) 242705, 243705

संस्थेचे कार्यक्षेत्र - • महाराष्ट्र • राजस्थान • मध्यप्रदेश • छत्तीसगढ • गुजरात • अंदमान-निकोबार

संस्थेची आर्थिक स्थिती

एकूण ठेवी	१३९२१ कोटी
एकूण कर्ज	९४९४ कोटी
एकूण गोदाम	६००
एकूण शाखा	४७६
सोने तारण कर्ज वाटप	३१०४ कोटी
एकूण सदस्य	१५ लाख

मुख्य कार्यालय :- सहकार सेतु, हुतात्मा गोरे पथ, बुलडाणा - ४४३ ००१ (म.रा.)

संस्थेची प्रकल्प

- पुणे येथे सभासदांच्या पाल्यांसाठी वस्तीगृह
- उच्च शिक्षण घेऊ इच्छिणाया विद्यार्थ्यांसाठी विशेष कर्ज योजना
- तिरुपती (आंध्रप्रदेश), माहुर (जि.नांदेड) व शिर्डी येथे भक्तनिवास
- बुलडाणा येथे १२५ मुलींकरीता छात्रानिकेतन सुविधा
- ६०० वेअर हाऊस (ग्रेन बँक)
- बुलडाणा व मोर्शी येथे गोरक्षणधाम
- बुलडाणा येथे वेदविद्यालय व जिवनसंध्या स्वर्गाश्रम

बुलडाणा अर्बन चॅरिटेबल द्वारा संचालित

सहकार विद्या मंदिर व कनिष्ठ विज्ञान, वाणिज्य महाविद्यालय

AQSR ISO 9001-2000 Registered

मुख्य कार्यालय :- विद्यानगरी, चिखली रोड, बुलडाणा - ४४३ ००१

www.sahakarvidyamandir.in

(07262) 244707, 245705

वर्ग १ ली ते १२ (विज्ञान शाखा)

वैशिष्टे

- बुलडाणा शहरापासुन ५ कि.मी. अंतरावर प्रदुषण विरहीत वातावरणात ३० एकराच्या विशालकाय परिसरामधील अनोखी शाळा.
- अत्याधुनिक उपकरणांनी सुसज्ज विशाल पुस्तकाल, पाठशाळा, विशाल भोजन कक्ष, इंडोअर व आऊटडोअर स्टेडीयम व सुविधायुक्त सहकार विद्या मंदिर.
- पौष्टीक भोजन तथा स्वास्थ रक्षा
- शैक्षणिक भ्रमण, आश्वारोहण, निर्यारोहण, नेमबाजी, स्विमींग, स्केटींग, कराटे, संगीत, तलवार बाजी आणि खुप काही.
- भारतीय संस्कृतीवर आधारीत परिपूर्ण शिक्षण, ज्याच्यामुळे आपला पाल्य शिक्षण व नैतिक मुल्यांनी आपल्या सर्वांगिण विकासामुळे एक आदर्श नागरीक बनु शकेल.
- विद्यार्थी निवास :- विद्यार्थी व विद्यार्थीनींसाठी स्वतंत्र व्यवस्था. • बुलडाणा जिल्ह्यात २२ इंग्रजी मिडीयम शाळा ज्यात २९००० विद्यार्थी शिक्षण घेतात.

• विनित •

सौ. कोमल झंवर
अध्यक्षा, बुलडाणा अर्बन चॅरीटेबल सोसायटी

राधेश्यामजी चांडक
संस्थापक अध्यक्ष बुलडाणा अर्बन

डॉ. सुकेशजी झंवर
अध्यक्ष बुलडाणा अर्बन

सहकाराची समृध्द परंपरा..... बुलडाणा अर्बन....!

सहकाराची समृध्द परंपरा..... बुलडाणा अर्बन....!

वर्ष-२०, अंक ४, जून २०२५

१२ अंक वार्षिक १२००/-

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ का लाडला

उपसम्पादक - संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

मो. 9702205252

'मेरा राजस्थान' के संरक्षक

स्व. रामनारायण घ. सराफ, मुम्बई

सम्पर्क करें...

सम्पादकीय कार्यालय

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राईवेट लिमिटेड
की शानदार प्रस्तुति

मेरा राजस्थान
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

बी- २१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व,
मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059. दूरध्वनि - 022- 4015 8094

भ्रमणध्वनिः 9322307908

अणुडाकः mailgaylordgroup@gmail.com
mainbharathunfoundation@gmail.com

अन्तरताना : http//: www.merarajasthan.co.in
http//:www.bijayjain.com

https://www.facebook.com/merarajasthanpatrika/
https://x.com/merarajasthan01
https://www.instagram.com/mera_rajasthan10/
https://www.youtube.com/@Merarajasthan10

कृपया विज्ञापन बिल, सदस्यता शुल्क के साथ सहयोग राशि का भुगतान नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908 UPI No.

संपादकीय ....

भारत को समर्पित है माहेश्वरी परिवार

भारतीय परिवारों में एक जाति माहेश्वरी परिवारों की भी है, जो आज विश्व स्तर पर फैले हुए हैं और अपनी कर्मठता की शौर्यता दिखाते हुए 'भारत' को विश्वस्तर पर सम्मान भी दिला रहे हैं। व्यवसाय हो या समाज सेवा या हो राष्ट्र की सेवा अपने परिवार की सेवा के साथ हर क्षेत्र में अग्रणीय हैं। समाज भवन का निर्माण हो या औषधालय या शिक्षालय का निर्माण, किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहे, हर क्षेत्र में अपनी शौर्यता व कर्मठता का परिचय दिखाते रहे हैं। भारत की स्वतंत्रता हो या विश्व प्रसिद्ध धर्मस्थल 'अयोध्या' का निर्माण, उसमें भी पीछे नहीं रहे, यशोगाथा कितनी लिखी जाये, किताब के पन्ने भी कम पड़ जाएंगे। जानते हैं यह कैसे हुआ? इसका श्रेय जाता है भोले भंडारी भगवान शिव और मां पार्वती जी के आशीर्वाद को, शास्त्रों में लिखी जानकारीनुसार जब 'लोहार्गल' के राजकुमार सूजानकंवर व उनके क्षत्रिय साथियों द्वारा ऋषियों के यज्ञ में बाधा डालने के कारण श्रापित हो गए तो उनको श्राप से मुक्ति दिलाने का आशीर्वाद मां पार्वती एवं भगवान शिव जी से मिला और पाषाण बने सभी क्षत्रियों को पुनर्जीवन प्राप्त हुआ, साथ ही मां पार्वती ने यह भी कहा कि अब शास्त्र छोड़, तराजू को अपनाना है।

यह वो दिवस था ज्येष्ठ शुक्ल नवमी, जिसे आज भी विश्व में फैले माहेश्वरी 'महेश नवमी' को पर्व के रूप में श्रद्धापूर्वक मनाते हैं। मंदिरों में पूजा की जाती है, शोभा यात्राएं निकाली जाती है, एक परिवार दूसरे परिवार के साथ बैठकर भोज का आनंद लेते हैं और प्रण करते हैं कि जब तक शरीर में श्वास है, परिवार, समाज, राष्ट्र की सेवा करते रहेंगे।

इसी श्रृंखला में एक राष्ट्रीय अभियान 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' एक राष्ट्र एक नाम 'भारत' की शुरुआत हुयी थी हुई तो माहेश्वरी परिवारों के बीच में से एक कोलकाता निवासी श्रीमती शोभा भगवानदास सादानी जो कि पूर्व में माहेश्वरी महिला महासभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रह चुकी हैं, आगे आईं और उन्होंने भारतीय माहेश्वरीयों के बीच एक भावना भरी, कि आज भी हम अपने प्यारे देश को 'इंडिया' क्यों बोलें, इंडिया नाम तो अंग्रेजों ने हम पर थोपा था, हम तो अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही बोलेंगे। कारवां चलता गया, लोग जुड़ते गए, 'भारत बनाम भारत' अंतरराष्ट्रीय अभियान बन गया, यहां पर कुछ विशेष नाम और भी लिखना चाहूंगा, राजस्थान के कोटा निवासी शिक्षा प्रेमी डॉ. गोविंद माहेश्वरी, माहेश्वरी महासभा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जोधराज लड्ढा जी की पुत्रवधू श्रीमती निशा संजय लड्ढा कोलकाता निवासी, विदेश में रहने वाले अरुण जी मूंदड़ा आदि-आदि सैकड़ों नाम है, जिनका संपूर्ण लेखन संभव नहीं है।

'सभी का सहयोग, ऐसा बना योग' की आज भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री अपने 'मन की बात' में 'भारत' नाम का ही उल्लेख कर रहे हैं।

संपादकीय संक्षिप्त होती है इसलिए 'महेश नवमी' की शुभकामनाएं देते हुए भारत सरकार से यही अपील करता हूं कि विश्व के मानचित्र GLOBE में जहां हमारे देश का नाम केवल INDIA लिखा हुआ है वहां BHARAT लिखा जाए और मुझे विश्वास भी है कि वर्ष २०२६ को 'महेश नवमी' पर्व जब हम मनायेंगे, INDIA नहीं केवल BHARAT में मनाएंगे।

जय श्री कृष्ण, जय भारत!

SBI BANK

for payment

HDFC BANK

for payment

आपका अपना
-बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए का
आव्हान करने वाला एक भारतीय
राष्ट्रीय अध्यक्ष
मैं भारत हूँ फाउंडेशन
मो.९३२२३०७९०८

मालपाणी उद्योग समूह

महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

MALPANI

www.saiteerth.in
97678 40000

मालपाणी पॅलेस ॲण्ड मालपाणी क्लब ॲण्ड रिसॉर्ट

अकोले रोड, संगमनेर, जि.अ.नगर, फोन: 02425-228851/ 98812 46144

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन

(त्रयोदश सत्र)

सर्वे भवन्तु सुखिन:

महेश नवमी के पावन पर्व पर मन वचन काया से सभी माहेश्वरी स्नेही बहनों एवं स्वजनों को हार्दिक शुभकामनाएं

सौ. मंजू बांगड़
राष्ट्रीय अध्यक्ष
कानपुर

सौ. ज्योति राठी
राष्ट्रीय महामंत्री
रायपुर

सौ. किरण लड्ढा
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
दिल्ली

सौ. ममता मोदानी
राष्ट्रीय संगठन मंत्री
भीलवाड़ा

सौ. आशा माहेश्वरी
निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष
कोटा

माँ रत्नी देवी काबरा
संरक्षक
मुम्बई

सौ. कल्पना गगरानी
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
मुम्बई

सौ. सुशीला काबरा
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
इंदौर

सौ. शोभा सादानी
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
कोलकात्ता

सौ. विमला साबू
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
सूरत

सौ. गीता देवी मूंधड़ा
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
इंदौर

सौ. लता लाहोटी
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
पूना

सौ. मनोरमा लड्ढा
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
ग्वालियर

सौ. गिरिजा सारड़ा
उपाध्यक्ष पूर्वांचल
नेपाल

सौ. मधू बाहेती
उपाध्यक्ष पश्चिमाचंल
कोटा

सौ. उर्मिला कलंत्री
उपाध्यक्ष मध्यांचल
अहमदाबाद

सौ. मंजू मानधना
उपाध्यक्ष उत्तराचंल
नई दिल्ली

सौ. अनुसूइया मालू
उपाध्यक्ष दक्षिणांचल
कोल्हापुर

सौ. निशा लड्ढा
संयुक्त मंत्री पूर्वांचल
कोलकात्ता

सौ. शिखा भदादा
संयुक्त मंत्री पश्चिमाचंल
भीलवाड़ा

सौ. अनिता जावदिया
संयुक्तमंत्री मध्यांचल
बनखेड़ी

सौ. मंजू हुरकट
संयुक्तमंत्री उत्तराचंल
मेरठ

सौ. रेणु सारडा
संयुक्तमंत्री दक्षिणांचल
हैदराबाद

सौ. प्रीति तोषनीवाल
कार्यालय मंत्री
कानपुर

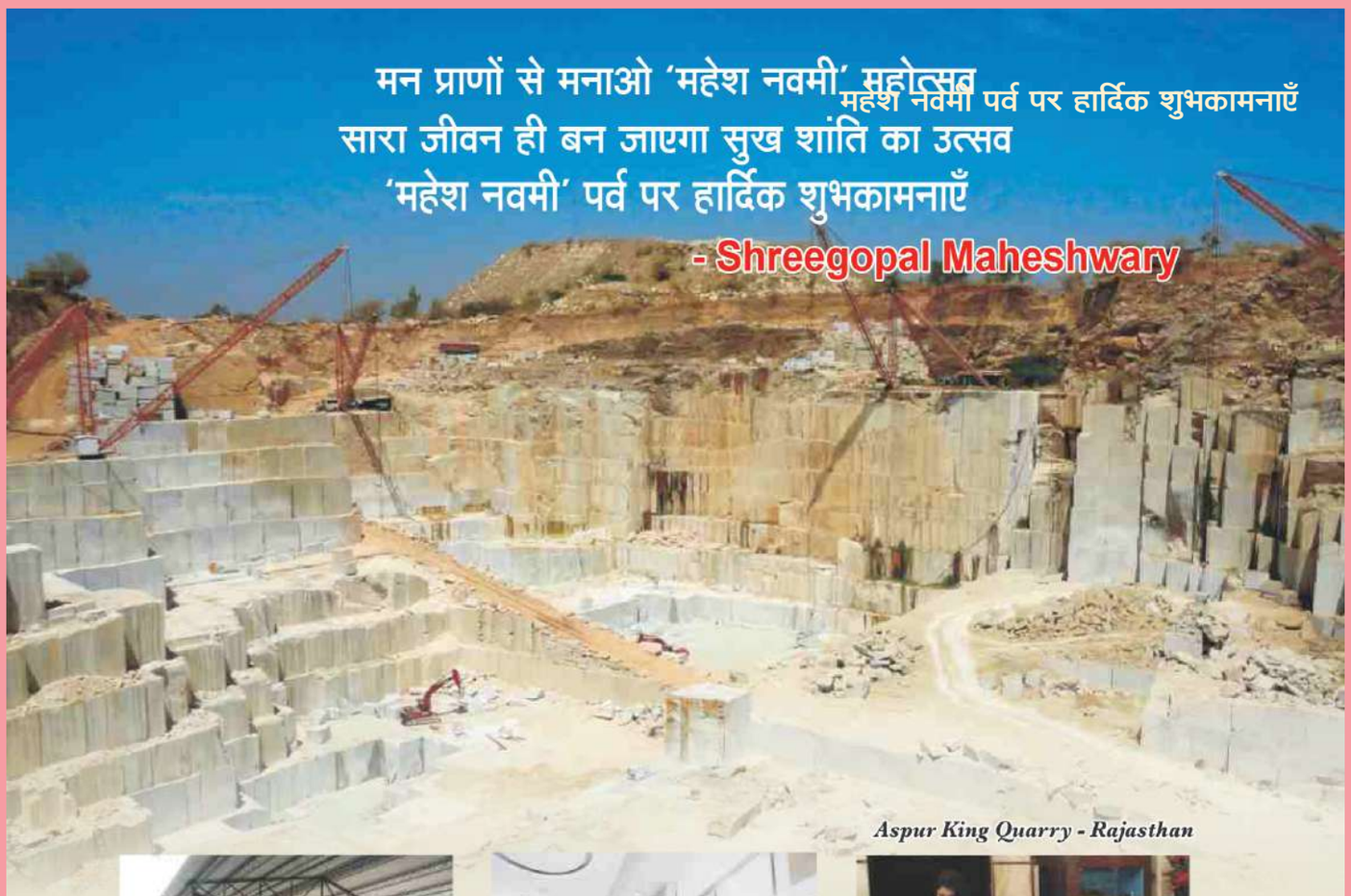

Aspur King Quarry - Rajasthan

Stockyard - Coimbatore

Stockyard - Coimbatore

sri maheshwary granites (p) ltd

STILL THE BIGGEST & BEST

Quarry Owners, Manufacturers and Dealers in all kinds of Natural Stones

Imported Marble | Indian Marble | Granites | Elevation | Slates-Sand Stones | Quartzite | Marmo Marble Tiles

Stockyards - Coimbatore

Unit 1 - Thadagam Road, Kanuvoy, Mob - 9994399999
Unit 2 - Luna Nagar, Thadagam Road, Mob - 9944415601
Unit 3 - Adjacent to Le Meridian, Avinashi Road, Mob - 9994399999

Quarries - Aspur, Bhadesar, Katni | **Factory** - Maheshwari Marbles Pvt Ltd, Chittorgarh & Katni

email: info@maheshwarymarbles.com, maheshwarygranites@yahoo.com

www.maheshwarymarbles.com

SB RANDER GROUP OF COMPANIES

Shri Bhagirath Textiles Ltd, Nagpur - Spinning Units
Shrigopal Rameshkumar - Nagpur
Multi Urban Infra Services Pvt Ltd - Water Supply Projects Specialists - Nagpur
Shri Madhusudan Rameshkumar - Mumbai, Malegaon, Ichalkaranji

माहेश्वरियों का अति पवित्र दिन महेश नवमी

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है, जहां विभिन्न धर्म, जाति और समुदाय के भिन्न-भिन्न रिति-रिवाज व अनुष्ठान मौजूद हैं, इन्हीं समुदायों में से एक समुदाय है 'महेश्वरी' जिस तरह प्रत्येक समुदाय के अपने अनुष्ठान और त्यौहार होते हैं वैसे ही 'महेश्वरी' समुदाय का भी अपना अनुष्ठान है, जिसे 'महेश नवमी' कहते हैं, यह समुदाय देश के उत्तरी हिस्से में अधिक निवासित है और हर साल महेश्वरी समाज 'महेश नवमी' उत्साह और हर्ष के साथ मनाता है, हालांकि यह समुदाय छोटा है लेकिन फिर भी पूरे देश में फैला हुआ है, 'महेश नवमी' हिन्दू कैलेंडर के अनुसार ज्यैष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की नवमी को मनाई जाती है, इस बार महेश नवमी ४ जून को मनाई जाएगी, यह त्यौहार मुख्य रूप से भगवान शिव के भक्तों द्वारा मनाया जाता है, भगवान शिव के कई नाम है कोई उन्हें महादेव तो कोई भोले भंडारी, तो कोई त्रिनेत्र कहता है। शिव के लोकप्रिय नामों में से एक नाम 'महेश' है। यह नाम भगवान शिव भक्ति का प्रतीक है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इस दिन वह अपने भक्तों के सामने पहली बार दिखाई दिए थे। भगवान शिव के वरदान स्वरूप 'महेश्वरी' समाज की उत्पत्ति मानी गई है, इनका उत्पत्ति दिवस ज्येष्ठ शुक्ल नवमी है, जो 'महेश नवमी' के रूप में मनाई जाती है। माना जाता है कि महेश स्वरूप में आराध्य भगवान 'शिव' पृथ्वी से भी ऊपर कोमल कमल पुष्प पर बेलपत्ती, त्रिपुंड, त्रिशूल, डमरू के साथ लिंग रूप में शोभायमान होते हैं।

महेश नवमी का महत्व: 'महेश नवमी' मनाने के पीछे कई कहानियां छिपी हैं। खांडलसेन नाम का एक राजा था, जिसको पुत्र नहीं था, इसलिए उन्होंने भगवान शिव की पूर्ण समर्पण और भक्ति के साथ पूजा की, जिसके बाद भगवान ने उसे सुजानसेन नामक बेटा होने का आशीर्वाद दिया, बाद में वह राज्य का राजा बन गया। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार 'महेश्वरी' समाज के पूर्वज क्षत्रिय वंश के थे। एक दिन जब इनके वंशज शिकार पर थे तो इनके शिकार कार्यविधि से ऋषियों के यज्ञ में विघ्न उत्पन्न हो गया, जिस कारण ऋषियों ने इन लोगों को श्राप दे दिया था कि तुम्हारे वंश का पतन हो जायेगा। सभी श्राप के कारण ग्रसित हो गये, किन्तु ज्येष्ठ माह में शुक्ल पक्ष की नवमी के दिन भगवान शिव जी की कृपा से उन्हें श्राप से मुक्ति मिली तथा शिव जी ने इस समाज को अपना नाम दिया, इसलिए इस दिन से यह समाज 'महेश्वरी' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। भगवान शिव जी की आज्ञानुसार महेश्वरी समाज ने क्षत्रिय कर्म को छोड़कर वैश्य कर्म को अपना लिया, अतः आज भी 'महेश्वरी' वैश्य रूप में पहचाने जाते हैं।

महेश नवमी का जश्न: 'महेश नवमी' मुख्य रूप से सनातनियों का त्यौहार है और भारत के सभी हिस्सों में मनाया जाता है, इस दिन भगवान महेश और देवी पार्वती की पूजा करते हैं, मंदिर फूलों से सजाए जाते हैं और पूरे स्थान को पवित्र किया जाता है, इस दिन नए विवाहित जोड़ों से विशेष रूप से खुशी और सद्भावना के साथ अपने जीवन में नया चरण शुरू करने के लिए भगवान शिव और देवी पार्वती की पूजा करने के लिए कहा जाता है।

महेश नवमी के अनुष्ठान: 'महेश नवमी' पर रात भर विभिन्न यज्ञों और मंत्रों का उच्चारण किया जाता हैं। भगवान शिव की विशेष झांकी निकाली जाती है, भगवान महेश से प्रार्थना की जाती हैं, उनकी कहानियां और प्रशंसा सुनाई जाती है। भगवान महेश का अभिषेक किया जाता है और शिव-पार्वती को इस दिन मंदिरों में सुंदर ढंग से सजाया जाता है। भजन संध्या मंदिर परिसर में होती है और आखिर में सभी भक्त प्रसाद ग्रहण करते हैं, लोग इस उत्सव को भगवान शिव और देवी पार्वती के प्रति अत्याधिक समर्पण, प्रेम और विश्वास के साथ मनाते हैं, एक विशेष धारणा है कि इस दिन जो महिलाएं बच्चे की इच्छा रखती हैं तथा शिव जी से इस दिन विशेष प्रार्थना करतीं हैं उन्हें भगवान शिव आशीर्वाद देते हैं, उनकी हर इच्छा पूरी करते हैं। केवल मंदिरों में ही इस दिन यज्ञ और प्रार्थना नहीं की जाती, अपितु लोग अपने-अपने घरों में भी महेश-पार्वती की विशेष पूजा-अर्चना करते हैं, साथ ही शिव-पार्वती से सुखी जीवन की प्रार्थना करते हैं।

- मेरा राजस्थान

VMS®

A BOND YOU CAN TRUST

Since 1988, Vinod Medical Systems Pvt. Ltd. has been a leader in Healthcare, Imaging, Signage, and E-commerce. We enrich lives across India with superior products and a nationwide network, fostering sustainable growth through quality and innovation.

HEALTHCARE

- RADIOGRAPHY & DIAGNOSTICS
- HOSPITAL FURNITURE

IMAGING

- INKJET PRINT PAPER MEDIA & EQUIPMENT
- DIGITAL PRINT MEDIA

SIGNAGE

- MEDIA
- DIGITAL INK
- PRINTERS

E-COMMERCE

VMS CART

WWW.VINODMEDICAL.COM, WWW.VMSCART.COM

REGD. OFF: NEAR, KRIPA KUNJ, B1 - 2, SAI NAGAR, RAILWAY CROSSING, RAIPUR, CHHATTISGARH 492009

CORP. OFF: 119,1ST FLOOR, OMKAR, THE SUMMIT BUSINESS PARK, B. L. BAJAJ ROAD, PRAKASHWADI, NEAR W.E.H METRO STATION, ANDHERI - KURLA ROAD, ANDHERI EAST, MUMBAI - 400093

@VINODMEDICALSYSTEMSVMS
@VINODMEDICALSYSTEMS
@VMS CART
@VINODMEDICALSYSTEMS

1800 202 1988

माहेश्वरी समाज वंशोत्पत्ति दिवस

महेश नवमी पर विशेष

४ जून २०२५ — हम हैं माहेश्वरी

महेश - ईश्वरी से महेश्वरी कहलाये।

दिए गए चित्र में छः ऋषि ऊपर बैठे हुए जिनसे गौत्र बने: सोनी, सोमाणी, जाखेटिया, सोढाणी, हरकुट, न्याती, हेड़ा, करवा, कांकाणी, मालू, सारडा, काहाल्या, गिलडा, जाजू, बाहेती, बिहाणी, बिदादा, बजाज, कलंत्री, कासट, कचौलिया, कालाणी, झंवर, काबरा, डाड, डागा, गट्टानी, राठी, बिड़ला, दरक, तोषनीवाल, अजमेरा, भण्डारी, छापरवाल, भट्टड़, भूतड़ा, बंग, अटल, इनाणी, भुराड़िया, भंसाली, लड्ढा, मालपाणी, सीकची, लाहोटी, गदइया, गगराणी, खटोड़, लखोटिया, असावा, चेचाणी, माणधन्या, मूंदड़ा, चौखड़ा, चांडक, बल्दवा, बाल्दी, बूब, बांगड़, मंडोवरा, तोतला, आगीवाल, आगसूड़, परताणी, नावंधर, नुवाल, पलोड़, तापड़िया, मणिहार, धूत, धूपड़, मोदाणी, पोरवाल, मंत्री, देवपुरा, नौलखा, टावरी,

दांये खड़े :- जागाजी सुजानकंवर

महेश्वरी समाज, समय के साथ कदम से कदम मिलाने में विश्वास रखता है, इस समाज के सदस्य परिवर्तनशीलता के पक्षधर हैं, इस दृष्टि से सब नित-नवीन हैं। महाकवि कालिदास ने नवीनता की व्याख्या करते हुए लिखा है-

पदे-पदे यन्नवतामुमैति, तदैवरूपम् रमणीयतायाः

माहेश्वरी समाज! समय के साथ कदम से कदम मिलाने में विश्वास रखता है, इस समाज के सदस्य परिवर्तनशीलता के पक्षधर हैं, इस दृष्टि से सब नित-नवीन हैं, महाकवि कालिदास ने नवीनता की व्याख्या करते हुए लिखा है-

पदे-पदे यन्नवतामुमैति, तदैवरूपम् रमणीयतायाः कदम-कदम पर जो नवीनता को स्वीकार कर लेते हैं, वे रमणीय रहते हैं। रमणीयता समय की शोभा है और समय रमणीय को रमणीयतम बना देता है।

माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति के संबंध में अनेक किंवदंतियां हैं। शिवकरण दरक जी ने जागाजी की बहियों से इस दृष्टि में इतिहास लिखने का प्रयास किया है और यह सिद्ध किया है कि जयपुर जिले के अंतर्गत खंडेला के प्रतापी राजा खड़गलसेन के पुत्र सुजानकंवर माहेश्वरी समाज के आदि पुरूष हैं। माना जाता है कि युवावस्था में एक दिन सुजानकंवर ७२ उमरावों के साथ आखेट पर गये, वहां उन्होंने ऋषियों को यज्ञ करते देखा। यज्ञ में बलि दी जा रही थी। हिंसा के मर्मान्तक माहौल ने सुजानकंवर को विचलित कर दिया और उसने तत्काल उमरावों से यज्ञ नष्ट करने को कहा। उमरावों ने वही किया, इस पर यज्ञकर्ता ऋषियों ने उन्हें श्राप दिया कि तुम सब जड़ हो जाओ, तत्काल सुजानकंवर सहित सभी उमराव पाषाण मूर्तियों में परिवर्तित हो गये। घटना की सूचना **शेष पृष्ठ १३ पर...**

महेश जिनका नाम है, कैलाश जिनका धाम है,
देवों के देव महादेव को, हम सबका प्रणाम है...
महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Sri Ram Gopal Mundhra

Smt. Prakash Mundhra

Mundhra Lighting Centre

Service Education Harmony

"Mundhra Chambers", # 87, 22nd Main Road, Banashankari
2nd Stage, Bengaluru, Karnataka, Bharat-560070
E-mail : mundhralighting@gmail.com
Phone : 080-26713802, 93426-76653

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

महेश जिनका नाम है, कैलाश जिनका धाम है,
देवों के देव महादेव को, हम सबका प्रणाम है...
महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा की प्रेरणा से गठित

बालचंद मोदी माहेश्वरी छात्रावास

सिर्फ बालको के लिए

२०-२१, राजीव गांधीनगर, कोटा, राजस्थान, भारत-३२१००५

श्रीमती लक्ष्मीदेवी बालचंद मोदी बालिका छात्रावास

२३H-२४H लैंडमार्क सिटी, कोटा

✷ प्रबन्ध न्यासी ✷

श्री नारायण स्वरुप कालानी

मो.: 9929909777

पृष्ठ १२ से... राजा खड़गलसेन को मिली, वे इस आघात को सहन नहीं कर सके, उन्होंने अपनी रानियों सहित पुत्र वियोग में प्राण त्याग दिये। सुजानकंवर की रानी चन्द्रावती विदुषी थी, उसने समस्त उमरावों की स्त्रियों के साथ ऋषियों के पास पहुंचकर अपने पतियों को श्राप से मुक्ति दिलाने की प्रार्थना की, इस पर ऋषियों ने भगवान महेश और भगवती पार्वती की प्रार्थना करने को कहा। रानियों की तपस्यापूत प्रार्थना से प्रसन्न होकर महेश और पार्वती जी ने उनके पतियों में

प्राण संचित कर दिये। सचेतन होकर सुजानकंवर एवं उनके सहयोगी यज्ञस्थल के समीप स्थल कुंड में स्नान करने उतरे तो वहां उनके सारे शस्त्र गल गये, जहां यह क्रिया सम्पन्न हुई, वह स्थान लोहार्गल कहलाता है, यह लोहार्गल अभी भी रींगस स्टेशन से २०-२५ मील उत्तर में पहाड़ों के मध्य स्थित है। लोहार्गल से लौटकर नवजीवन प्राप्त राजकुमार एवं उमराव भगवान महेश्वर के नाम पर 'माहेश्वरी' कहलाए और खंडेला उनकी मातृभूमि मान्य हुई। शस्त्र गल जाने के कारण सुजानकंवर एवं ७२ उमरावों ने तराजू धारण कर लिया, इसी पर जागाजी के बताये अनुसार दरक जी ने लिखा है-

कृपाण त्याग कर कलम लीन्हा तज ढाल तराजू कुरतदीना

माहेश्वरी समाज ने सामंजस्य पैदा करने वाली अवधारणा स्वीकार की और अपने आप को प्रतिष्ठित करने के लिए समय के संकेत के अनुरूप काम किया। वह समय महाभारत काल का था। प्रसिद्ध जागा सूरजमल मुकनलाल की बही के अनुसार माहेश्वरी जाति की उत्पत्ति उसी समय यानि अब से लगभग ५१५३ वर्ष पूर्व हुई थी, लगता है कि उस समय विशेष उल्लेख योग्य कार्य न होने से इतिहास नहीं बना और फिर विक्रम की ८वीं-१०वीं सदी के बीच ऐतिहासिक घटना हुई, उसका नेतृत्व सुजानकंवर ने किया। युग परिवर्तन जितना बड़ा सृजन का काम घर में रहकर नहीं किया जा सकता, इसलिए संभव है कि उन्होंने 'जोग' लिया हो और इसी कारण बाद में वे 'जागा' कहे जाने लगे। 'जागा' जोग का अपभ्रंश और योग की याद दिलाने वाला सांकेतिक शब्द है।

सुखसंपतराय भंडारी की धारणा है कि भगवान शंकराचार्य के समय माहेश्वरी जाति अस्तित्व में आई और वह समय ११०० वर्ष पूर्व का है। जागों की बहियों के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ला नवमी को श्री महेश भगवान के आशीर्वाद से माहेश्वरी जाति की उत्पत्ति हुई।

इस मत के परिप्रेक्ष्य में भी जैन इतिहास गौर करने लायक है, इतिहासवेत्ता मुनि जिनविजय जी ने जानकारी देते हुए लिखा है:

'वस्तुत: उस जमाने में ऐसे धर्म परिवर्तन ने प्रजा के पारस्परिक विद्वेष को कम किया और सामाजिक उत्कर्ष को बढ़ाया। गुजरात के अनेक प्रतिष्ठित कुटुंबों में जैन और शैव दोनों धर्मों का पालन किया जाता था, किसी गृहस्थ का पितृकुल जैन था तो मातृकुल शैव और किसी का मातृकुल जैन था **शेष पृष्ठ १४ पर...**

पृष्ठ १३ से... तो पितृकुल शैव, इस तरह गुजरात में वैश्य जाति के कुलों में प्राय: दोनों धर्मों के अनुयायी थे। शैवों और जैनों की कोई अलग-अलग समाज रचना नहीं थी। सामाजिक विधी-विधान सब ब्राह्मणों के द्वारा ही मान्य नियमानुसार संपन्न होते थे। शैव कुटुंबों की कुलदेवी एक ही थी, उनका पूजन-अर्चन दोनों कुटुंब वाले कुल परंपरानुसार एक ही विधि से करते थे। सामाजिक दृष्टि से दोनों में अभेद ही था। सिर्फ धर्म भावना और उपास्यदेव की दृष्टी से थोड़ा भेद था। शिवपूजकों के कुछ वर्गों में मद्य मांस त्याज्य नहीं माना जाता था परंतु जैनों में यह सर्वथा त्याज्य था। कोई भी अगर जैन होता तो उसका अर्थ यही होता था कि उसने मद्य-मांस का सेवन त्याग दिया है और इसको त्याग कर उसने जीव हिंसा न करने का व्रत लिया है। शैव और जैन दोनों मुख्य रूप से गुजरात के प्रजाधर्म थे, फिर भी सामान्य रूप से राजधर्म शैव ही माना जाता था और गुजरात के राजाओं के उपास्यदेव शिव ही थे। कई बार राज कुटुंबों में से भी कोई जैन धर्म के अनुसार संन्यास दीक्षा ग्रहण करता था। अनेक राजपुत्र जैन आचार्यों के पास शिक्षा ग्रहण करते थे। सुजानकंवर का इतिहास भी इसी बात की पुष्टि करता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि उस समय मारवाड़, मालवा आदि सारे प्रदेश गुजरात राज्य के अंतर्गत थे या उससे प्रभावित थे।

केदारनाथ - उत्तराखंड

श्री शिवकरण जी ने बड़वा जागाजी की बहियों पर वर्षों तक शोध कर उन माहेश्वरी बंधुओं के नाम पर भी प्रकाश डाला है, जिन्होंने जैन धर्म स्वीकार किया और जैन धर्म को मानने वाली मुख्य जाति ओसवाल में मिले, जैसे-

१.रतनपुर के राजा के दीवान माल्हदेवजी भामुजी के खचांजी थे। श्री बलाशाह राठी फौज को मोदीपा देते थे। श्री माल्हदेवजी के लड़कों को अंधगी की बीमारी हो गई। श्री जिनदत्त सुरिजी ने ठीक किया, तब उन्होंने जैन धर्म स्वीकार किया। उनके साथ डागा, मूंदड़ा के कई परिवारों ने जैन धर्म स्वीकार किया। भामुजी का पारख मोराजी का छोरीया कहलाये। ५२ परिवारों ने जैन धर्म स्वीकार किया।

२.सिन्धु देश के मुलतान नगर में श्री धींगड़मल हाथी शाह माहेश्वरी राजा का दीवान था उनका पुत्र लुणा था, जिसको सांप ने काटा था। उसे श्री जिनदत सूरीजी ने वापस जीवित किया, तब उन्होंने जैन धर्म स्वीकार किया। लुणा से लुणिया कहलाये।

३.श्री नाबाजी लढ़ा माहेश्वरी का ब्रह्ममान सूरीजी ने उपदेश देकर जैन धर्म स्वीकार कराया। लढा से लोढा कहलाये।

४.श्री खेताजी बाहेती के लाला व भीमा नाम के पुत्र थे। ये दोनों नवाब लोदी रूस्तम के खजाने के लिए काम करते थे, इन्होंने करोड़ों रुपयों के साथ सामान भी माहेश्वरी व ब्राह्मणों को बांट दिया। किसी ने नवाब से चुगली कर दी। नवाब ने अहमदाबाद में दोनों को गिरफ्तार कर लिया। किसी तरह से जेल के पहरेदारों की नजर बचाकर वे भाग गये। तपागच्छ की जाति ने इनको लूकाया (छिपाकर रखा)। जोधपुर और फलौदी में लूककर (छिप कर) रहे, तभी उन्होंने जैन धर्म स्वीकार किया।

५.नागौर के पास मुधाड़ा नगर 'मूंदड़ा' का बसाया हुआ है। वहां पर मुंदल देवी का मंदिर बनाया गया। उनका पुत्र गायब हो गया था। देवालजी जैन संत ने वापिस लाकर दिया। देवी ने नाहर का रूप बना रखा था, इसलिए जैन धर्म स्वीकार किया व नाहर कहलाये।

६.विक्रम संवत ११७६ में श्री वल्लभ सूरीजी मदोदर नगर में पधारे। वहां के राजा नानद परिहार के संतान नहीं थी। एक जैन आचार्य ने पुत्र वरदान दिया, पुत्र हुआ और जैन धर्म स्वीकार किया। उस समय कुछ माहेश्वरी व ब्राह्मणों ने भी जैन धर्म स्वीकार किया था।

७.श्री डीडाजी मोहता ने सिरोही में जैन धर्म स्वीकार किया।

८.सं.१०१६ में छोहरिया तातेड़ जाति लढ़ा माहेश्वरी से बनी। सं.४४४ से बीरणी मेढा जाति मूंधड़ा माहेश्वरी से बनी। सं.१०२२ में शाह लछमणजी माहेश्वरी मूंदड़ा जिसके सुडाणी गुरू के प्रताप से पुत्र हुआ, नाहेरी चुंगी जैन धर्म स्वीकार किया और नाहर कहलाये।

अहिंसा के अनन्य उपासक होने का गौरव पाने के बावजूद जैन समाज असि (तलवार), मसि (कलम-दवात) कृषि को अपनाये रहा, किन्तु माहेश्वरी समाज ने असि एवं कृषि छोड़कर मात्र कलम-तराजू और वैश्य कर्म को समग्रभाव से उजागर किया, इसी कारण व्यावसायिक जगत में माहेश्वरी समाज को अहंस्थान प्राप्त है।

माहेश्वरी समाज **शेष पृष्ठ १५ पर...**

जय उमा महेश जय भारत जय उमा महेश

महादेव महेश्वर की कृपा का चमत्कार,
माहेश्वरी समाज को जाने सारा संसार
महेश नवमी के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

सर्वे भवन्तु सुखिनः

Gwaldas Shakuntala Karnani
Mob: 9940067582
19/10, Manikeshwari Street, Shreshta
Anugraha, Apartment, Plat No. 3B, Kilpauk,
Chennai, Tamilnadu, Bharat - 600010

महादेव महेश्वर की कृपा का चमत्कार,
माहेश्वरी समाज को जाने सारा संसार
महेश नवमी के पावन पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

Gopal Sadani
Mob: 93705 87744

Shyam Sadani
Mob: 85510 39244

Sadani Associates
Auth. Distributor Greenlam
Laminates Rehau Solid Surface
Plot No. 38 Patidar Bhavan Road, Lakadganj,
Queta Colony Nagpur, Maharashtra, Bharat- 440008
Ph: 0712-2733999 Mob: 93738 88995
Email: sadaniassociate@gmail.Com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पृष्ठ १४ से... की जाति के अग्रदूत तपोधन श्री कृष्णदास जी जाजू के शब्दों में-'यथार्थ बात क्या है, यह तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन राजपूताने की जितनी वैश्य जातियां हैं, वे मूल स्त्रोत में क्षत्रिय थीं, हमारे पूर्वज भी राजपूत थे फिर वैश्य हुए, संभव है उस समय बौद्ध धर्म और जैन धर्म का प्रभाव पड़ा हो, पर यह बात निश्चित है कि हमने वैश्य कर्म स्वीकार किया और इस प्रकार यह परिवर्तन हुआ, जैसी भी घटना घटी हो, लेकिन हमारे पूर्वजों का वैश्य कर्म स्वीकार करना बहुत हिम्मत का काम था, जहां हम छोटी-छोटी बातों में परिवर्तन करने से घबराते हैं, वहां एक वर्ण को छोड़कर दूसरे वर्ण को ग्रहण करना कितना कठिन कार्य था, यह सहज ही समझा जा सकता है? जागाजी अंबालाल मोतीराम झड़ोल निवासी की बहियां यह भी बताती हैं कि उसके बाद भी समय-समय पर बहुत सी क्षत्रिय जातियां आकर माहेश्वरी समाज में मिली हैं और इस तरह माहेश्वरी समाज ने समय को पहचान कर सबको अपने में शामिल कर लिया तथा समय के साथ चलने में शक्ति लगायी। इसी कारण कहा जा सकता है कि वो समय माहेश्वरी समाज के साथ रहा है क्योंकि माहेश्वरी इतने मौलिक हैं- जितना स्वयं सृजन है।

नवजागरण की प्रथम ज्योति : 'वैश्य महासभा' सन् १८९२ में स्थापित हुई, उसने उत्तर भारत में वैश्य समाज को एकसूत्र में संगठित करने का प्रयास किया लेकिन वैश्य महासभा का एकाकी संगठन वैश्य समाज को, जो कि अनेक जाति, उपजातियों में विभाजित है, प्रगति देने के लिए नाकाफी था। अत: विविध वैश्य उपजातियों में अपने पृथक संगठन बनाने की भावना पैदा हुई।

पुराने कागजात और इतिहास सामग्री से यह सिद्ध हुआ है कि सामाजिक जागृति की सर्वप्रथम ज्योति माहेश्वरी समाज में सन् १८९२ में प्रकट हुई, जबकि अजमेर में स्वनामधन्य रा.ब.श्यामसुंदर लाल जी लोईवाल, दीवान किशनगढ़ राज्य से सदुद्योगों के लिए माहेश्वरी महत्सभा की स्थापना हुई।

भारत में माहेश्वरी समाज ही पहला संगठन है, जिसने बालविवाह का निषेध किया एवं इसके प्रस्ताव से प्रेरित होकर समाजसेवी दिवान बहादुर श्री हरि विलास जी शारदा (अजमेर) ने इस आशय का कानून केन्द्रीय असेम्बली में प्रस्तुत किया, जो 'शारदा एक्ट' के नाम से विख्यात है। श्री हरि विलास जी शारदा एवं उनका परिवार प्रारंभ से ही माहेश्वरी महत्सभा से संबद्ध रहा है।

माहेश्वरी महासभा की स्थापना : माहेश्वरी महासभा का संगठन सन् १९०० ई. में शिथिल हो गया और उसके अधिवेशनों की शृंखला टूट गई, लेकिन इस संस्था ने समाज में जन जागृति की जो ज्योति प्रदीप्त की थी, वह जगमगाती रही। जगह-जगह सभाओं और पंचायतों ने समाज सुधार का काम उठा लिया, लेकिन वे सब स्थानीय संगठन थे, उनसे सारे देश के माहेश्वरीयों को एकसुत्र में संगठित नहीं किया जा सकता था। समाज के देशव्यापी संगठन के लिए राष्ट्रीय संस्था खड़ी की जाये। सेठ रामनारायणजी राठी, सेठ दामोदरदास जी राठी, तपोधन श्रीकृष्णदास जी जाजू ने अमरावती में सेठ गणेशदास जी राठी के सहयोग से वि.स.१९६४ अर्थात् सन् १९०८ में 'माहेश्वरी महासभा' की स्थापना की।

माहेश्वरी भवन, मरीन लाइन्स, मुंबई

अमरावती अधिवेशन में कन्या विक्रय, औसर-मौसर, अश्लील गान, वेश्या नृत्य आदि कुप्रथाओं पर प्रबल प्रहार करते हुए, सामाजिक **शेष पृष्ठ १६ पर...**

पृष्ठ १५ से... सुधारों की दिशा में आगे बढ़ने का श्री गणेश हुआ। माहेश्वरी बंधुओं ने समाज के कल्याण की ओर ध्यान देना प्रारंभ किया और जगह-जगह कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठने लगी।

शिक्षा कोष, शिक्षा ट्रस्ट एवं शिक्षा केन्द्र का प्रारंभ : माहेश्वरी महासभा का द्वितीय अधिवेशन सन् १९१२ में नागपूर में हुआ। इस अधिवेशन में ब्यावर निवासी देशभक्त सेठ दामोदरदासजी राठी के प्रयत्न से शिक्षाकोष की स्थापना हुई थी।

सामाजिक कुरीतियों का निषेध करने के साथ-साथ शिक्षा संबंधी कार्य करने की दृष्टि से विचार करने एवं तदनुरूप संगठन करने हेतु कमेटियां भी गठित हुईं।

नागपूर महासभा के अवसर पर उपस्थित पोकरण फलौदी के पंचों ने महासभा के नियमानुसार न्यात के ठहराव करवाये। महासभा के नागपूर अधिवेशन के अध्यक्ष ने केवल उन्हें प्रोत्साहित ही नहीं किया, वरन् उनके काम को आगे बढ़ाने में हेतु अपेक्षित सहयोग देने की घोषणा भी की जिससे प्रथम शिक्षा ट्रस्ट स्थापित हुआ, इस ट्रस्ट ने भी कुछ समय तक पोकरण में शिक्षा प्रचार का काम किया, इसी अधिवेशन की प्रेरणा से मारवाड़ी शिक्षा मंडल, वर्धा की स्थापना हुई, इस प्रकार महासभा के द्वितीय अधिवेशन में प्रथम शिक्षा कोष, प्रथम ट्रस्ट और प्रथम विद्यालय की रूपरेखा स्पष्ट हुई जिससे बालक-बालिकाओं को शिक्षण देने और उनमें धार्मिक, नैतिक और गृहकार्य संबंधी शिक्षा पाने की भावना जगाने का कार्य हुआ। जगह-जगह पंचायतें कायम हुईं, रीति-रिवाज निश्चित हुए। सामाजिक सुधार के लिए धन संग्रह करने और उसकी व्यवस्था करने की दृष्टि से कमेटियां बनीं, इसके साथ ही औसर संबंधी नियम समान रूप से लागू करने की बात ध्यान में आई और यही द्वितीय महासभा अधिवेशन की सफल फलश्रुति रही।

'माहेश्वरी महासभा' के नागपुर अधिवेशन के पश्चात् १९१३ में श्री भागीरथदासजी भूतड़ा आदि के प्रयत्नों से अलीगढ़ में श्री जैसलमेरी माहेश्वरी महासभा स्थापित हुई। १९१४ में सभा का नाम 'माहेश्वरी सभा रखा' गया और १९१५ में 'श्री माहेश्वरी महासभा'। मेरठ अधिवेशन में इसके प्रतिनिधियों ने बीकानेरी, जैसलमेरी, पोकरणी, फलौदी और देशवासी माहेश्वरियों में विवाह संबंध खोलने की मांग की। १९१६ में संपन्न अधिवेशन में इस महासभा का कार्यालय अलीगढ़ से दिल्ली ले जाने एवं कार्यक्षेत्र को व्यापक करने का निर्णय हुआ।

रोटी-बेटी के व्यवहार में उदारता बरतने की सिफारिश : उधर पूर्वागत माहेश्वरी महासभा का तीसरा अधिवेशन १९१७ में पाली में हुआ, जिसमें गुजरात के माहेश्वरी समाज की ओर से सीधा प्रश्न रखा गया कि सैकड़ों वर्षों से मारवाड़ से सम्पर्क न रहने के कारण जो पारस्परिक व्यवहार नहीं रहा है, उसे प्रारंभ किया जाए और पारस्परिक परिचय बढ़ाया जाये? बिना परिचय बढ़े रोटी-बेटी का संबंध कैसे हो? पाली अधिवेशन में पहली बार महासभा की कार्यकारिणी समिति का चुनाव हुआ तथा उसका नाम 'माहेश्वरी मण्डल' रखा गया।

अलीगढ़ में गठीत महासभा का अधिवेशन १९२० को कोलकत्ता में हुआ, उसमें उपस्थिति बहुत कम रही तब माहेश्वरी समाज में यह चर्चा उठी कि समाज में दो सभाओं की आवश्यकता क्या है? दोनों सम्मिलित हो जानी चाहिए। माहेश्वरी महासभा ने भी इस पर ध्यान दिया। तपोधन श्री कृष्णदासजी जाजू ने श्री माहेश्वरी महासभा अध्यक्ष को विस्तृत पत्र लिखकर एकीकरण की भूमिका बनाई, जिसे 'श्री माहेश्वरी महासभा' ने अपने अलवर अधिवेशन में स्वीकार कर लिया।

राष्ट्रीय आंदोलन का सक्रिय समर्थन : माहेश्वरी महासभा का चतुर्थ अधिवेशन १९२१ को अकोला में हुआ, वहां सर्वसम्मत प्रस्ताव द्वारा महासभाओं के सम्मिलित होने की घोषणा कर दी गई। वहीं पहली बार 'माहेश्वरी महासभा' के उद्देश्य एवं नियम सामने आये, अकोला अधिवेशन में सामाजिक, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक विषयों की चर्चा हुई और निम्न प्रस्ताव पारित हुए:-

१.महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे स्वाधीनता आंदोलन को सक्रिय समर्थन दिया जाए और असहयोग कार्यक्रमों में शामिल हुआ जाए।

२.स्वदेशी वस्तुएं ही उपयोग में ली जाएं।

३.गौरक्षण एवं गोवर्धन के कार्य की अनदेखी न की जाये।

४.देशी राज्यों में उत्तरदायी शासन प्रणाली प्रारंभ की जाये।

५.राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा मातृभाषा मारवाड़ी का प्रचार किया जाये।

६.संगीत, कला के क्षेत्र में परिष्कृत **शेष पृष्ठ १७ पर...**

महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको हार्दिक शुभकामनाएँ

प्रो. जाजु ब्रदर्स
मो. 7588848888
गोपाल हार्डवेअर

गोपाल पेन्टस् हाऊस
asianpaints Dulux Birla White
G.K. Jaju & Associates
Income Tax & GST Practitioner
Gopal Jaju
B.com, DTL, LLB, GDC&A
Mondha Raod, Georai
Dist. Beed - 431 127
मोंढा रोड, गेवराई, जि. बीड ☎ : 02447-262997, Mob : 9422555379, 9372555379
Email : gopalpainthouse@gmail.com, adv.gopaljaju@gmail.com

पृष्ठ १६ से... रूचि को प्रोत्साहन दिया जाये।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की प्रशस्ति

महासभा का पांचवां अधिवेशन १९२२ को कलकत्ता में हुआ, तब आम राय से इस संस्था का नाम

'अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा' कर दिया गया।

कलकत्ता अधिवेशन के बाद महासभा का विशेष कार्य कलकत्ता से ही होने लगा और इसके संगठन ने व्यापक तथा व्यवस्थित रूप ले लिया।

सत्याग्रह में भाग लेने वालों को प्रोत्साहन : महासभा का कार्य जैसे-जैसे बढ़ता गया और स्थान-स्थान पर इसके प्रस्तावों के परिप्रेक्ष्य में चर्चा वार्ताएं, सभा-संगोष्ठियां हुईं, वैसे-वैसे माहेश्वरी समाज में जीवन और जागृति की लहर बढ़ती गई, इस समाज ने न केवल सामाजिक बुराईयों के खिलाफ संघर्ष प्रारंभ किया, वरन राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय साथ देना शुरू कर दिया। आम आदमी के लिए भी इस समाज ने यह स्पष्ट किया कि वह जहां रहता है, वहीं रहकर रचनात्मक काम करे। वस्त्र की कमी की संभावना को देखते हुए महासभा ने एक ओर जहां विदेशी कपड़ों के बहिष्कार की अपील की, वहीं मील के कपड़े की अपर्याप्तता को मद्देनजर रखते हुए चरखा कातने और ग्रामोद्योगी वस्तुएं इस्तेमाल करने का भी आग्रह रखा, इन सारी बातों में महासभा का राष्ट्रीय स्वरूप पूरी तरह उजागर हुआ। समाज के सभी वर्गों ने उसका अभिनंदन किया और तन-मन-धन से स्वीकृत प्रस्तावों के अनुरूप कार्य करने में कृतार्थता मानी।

स्वतंत्रता संग्राम के बीच महासभा का छठा अधिवेशन १९२३ में इन्दौर में हुआ। वहां खुली अपील की गई कि माहेश्वरी बंधु सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने हेतु त्याग एवं वीरता की भावना के साथ आगे बढ़ेंगे और लोकमान्य तिलक के शब्दों में 'जन्म सिद्ध अधिकार स्वराज्य' को प्राप्त करने में आजादी की भावना का साथ देगें।

वाणिज्य उद्योग कम्पनी धंधों की ओर झुकाव

माहेश्वरी समाज खण्डेला के राजा खड़गलसेन के पुत्र सुजानकंवर एवं उनके उमरावों द्वारा कृपाण त्याग कर तराजू हाथ में लेने जैसी घटना से ऐतिहासिक मोड़ ले चुका था, उनके साथ चौहान, पंवार, कछवाहा, पड़िहार आदि क्षत्रिय जातियां अपने आप को माहेश्वरी वैश्यों में शामिल कर चुकी थीं और इस तरह लगातार शामिल होने वाले समान धर्मी भाई वैश्य कर्म को नये-नये आयाम देते हुए आगे बढ़ रहे थे। परंपरा के अनुरूप कोलवार भी अपने को माहेश्वरी कहने लगे। अत: जब महासभा का सप्तम अधिवेशन १९२४ बम्बई में हुआ तब यह प्रश्न खड़ा हुआ कि कोलवारों को माहेश्वरी माना जाये की नहीं? जागाजी अंबालाल मोतीराम (कस्तूरचंद शंकरलालजी) की बहियों से छ: माह तक खोजबीन करवाई गई कि कोलवार माहेश्वरी हैं या नहीं, उनके साथ रोटी-बेटी का संबंध हो या नहीं? पक्ष-विपक्ष में तरह-तरह की दलीलें आयीं। अधिवेशन का वातावारण अशांत बना। पंचायत पक्ष ने सामाजिक बहिष्कार का उपयोग कर मत स्वातंत्र को दबाने की चेष्टा की, उससे मतभेदों की तीव्रता बढ़ी, फलत: शेष पृष्ठ १८ पर...

कर्म की भूमि पर किस्मत का फूल खिलता है। नसीब अगर बुलंदी पर हो तो ही माहेश्वरी में जन्म मिलता है। महेश नवमी के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

BURHANPUR TEXCOAT INDUSTRIES

Butterfly BOOK BINDING CLOTH

B. P. Lakhotiya
Suresh Lakhotiya

"Butterfly" Manufacturer of Brand Book Binding Cloth

Dargah Road, Lodhipura, Burhanpur, Madhya Pradesh, Bharat - 450 331
Ph: +919425085843| +919425085965 | Tin No: 23031908327
Email: butterflybindingcloth@gmail.com
Web: http://www.butterflybindingcloth.com

पृष्ठ १७ से... अधिवेशन बीच में ही समाप्त कर देना पड़ा, लेकिन समाप्ति से पूर्व इस अधिवेशन ने कलम और तराजू के क्षेत्र को नये-नये आयाम देने की दृष्टि से गंभीरतापूर्वक सोचा तथा माहेश्वरी बंधुओं से आग्रह किया गया कि वे वाणिज्य, उद्योग, कम्पनी आदि धंधों की तरफ ध्यान दें।

विदेश यात्रा की छूट

महासभा का अष्टम अधिवेशन १९२७ में पंढरपुर में हुआ। इस अधिवेशन में कोलवार प्रकरण से संबद्ध चर्चा खूब विस्तार से हुई। महासभा ने प्रश्न के छान-बीन हेतु जो कमीशन नियुक्त किए थे, उनकी भी रिपोर्ट प्रस्तुत हुई और सारे निष्कर्षों को मद्देनजर रखते हुए यह निर्णय घोषित कर दिया गया कि ऐतिहासिक दृष्टि से कोलवार माहेश्वरी ही हैं। व्यावहारिक दृष्टि से समाज की रूचि उनके साथ विवाह संबंध खोलने की नहीं है।

स्त्री-शक्ति जागरण

महासभा का नवम् अधिवेशन १९२९ में धामणगांव में हुआ। इस अधिवेशन में पहली बार कोलवार माहेश्वरी प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए, इस अधिवेशन की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि महिलाएं बड़ी संख्या में अधिवेशन में शामिल हुईं। अनेक बहनें बिना परदे थीं, इस समय देश में राजनैतिक आंदोलन जोरों पर था। गांधीजी के नेतृत्व में सत्याग्रह चल रहा था। नमक सत्याग्रह, जंगल सत्याग्रह, विदेशी कपड़े तथा शराब की दुकानों पर पिकेटिंग के कार्यक्रम आयोजित हो रहे थे। माहेश्वरी समाज की बहनें जहां एक ओर उन कार्यक्रमों में सक्रिय भाग ले रही थीं, वहीं अधिवेशन में भी उपस्थित रहकर सामाजिक प्रगति को गति दे रही थीं, उनकी समस्याओं को ध्यान में लेकर अधिवेशन में प्रस्ताव किया गया कि समाज की स्थिति सुधारने के लिए लड़कियों का विवाह बड़ी उम्र में किया जाये, परदा प्रथा उठा दी जाये और जिन कारणों से लड़कियां भारभूत प्रतीत होती हैं, उन्हें दूर किया जाये।

अधिवेशन ने नारी जागरण का शंखनाद करते हुए अपनी यह राय व्यक्त की कि माहेश्वरी जाति की स्त्रियों के शारीरिक ह्रास को और उनकी गिरी हुई दशा को देखकर महासभा को अति खेद है। उनका अल्प आयु में विवाह होना, ब्रह्मचर्य की रक्षा न होना, उनके हितों की उपेक्षा होना इत्यादि कारणों से स्त्रियों की मृत्यु संख्या अत्यधिक बढ़ रही है, परिणाम स्वरूप उनकी संख्या कम होकर दिन-दिन कुंवारों का प्रश्न भीषण रूप धारण कर रहा है। उक्त दशा को सुधारने के लिए महासभा की राय बनी कि लड़कियों का विवाह बड़ी उम्र में किया जाए।

महासभा का दसवां अधिवेशन १९३१ में देवलगांव में सम्पन्न हुआ। सभा ने कांग्रेस के आंदोलन का समर्थन करते हुए सामाजिक विषयों पर अनेक प्रस्ताव पारित किये।

प्रस्तावों में राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति सहानुभूति प्रकट की गई, सत्याग्रह कर जेल जाने वालों की प्रशंसा की गई, कन्याओं को उच्च शिक्षा दिलाने पर बल दिया गया तथा मेधावी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति का प्रावधान किया गया। इसी अधिवेशन में महासभा कार्यकारिणी मंडल के अंतर्गत 'प्रबंध कारिणी समिति' बनाने का निश्चय हुआ, जो वर्तमान में कार्य समिति के रूप में कार्य कर रही है। देवलगांव अधिवेशन में पहली बार विधवा विवाह **शेष पृष्ठ २० पर...**

महेश जिनका नाम है, कैलाश जिनका धाम है,
देवों के देव महादेव को, हम सबका प्रणाम है...
महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

G. S. Rathi
Director
Mob: 9840009451

AMIT TREXIM
PVT. LTD.

Offi.: 2A Suvarnalok, 34 Malony Road, T. Nagar,
Chennai, Tamil Nadu, Bharat-600017
Resi.: Brindavan, 3/285 V.V. Subramanium Salai, Nainarkuppam,
Uthandi, Chennai, Tamil Nadu, Bharat - 600119
Ph: 044-24530755 | email: gourishankarrathi@gmail.com

जय महेश जय भारत जय महेश

महेश जिनका नाम है, कैलाश जिनका धाम है,
देवों के देव महादेव को, हम सबका प्रणाम है...
महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

सर्वे भवन्तु सुखिनः

Anil Machhar

Utsav Logistics Pvt. Ltd.

510, Janki Center, Veera Desai Road,
Andheri West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400053
Ph.: 022- 66713960/61 Fax : 022-66713962

महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाए

DRTC

Delhi Rajasthan Transport Co. Ltd.

R.O. : 1206, The Ambience Court, Opp APMC RTO Office, Sector 19 D, Vashi, Navi Mumbai, Maharashtra, Bharat-400705
Phone.: 022- 41291800 - 41291810 (10 Line) E-mail: mumbai@drtcindia.com
H.O.: DRTC House, Behind Olympic Complex, Jodhpur, Rajasthan, Bharat-342 001.
Tel: 0291-2633673, 0291-2633674 E-Mail: jodhpur@drtcindia.com

: MAIN BRANCHES :

Jodhpur	: 2633673	Secunderabad	: 32982119	Ludhiana	: 4646184
Jaipur	: 3919326	Hyderabad	: 24523820	Amritsar	: 3257294
Ajmer	: 2622842	Vijaywada	: 2561220	Ahmedabad	: 25467622
Sriganganagar	: 3205220	Rajamundry	: 2469802	Surat	: 2355036
Alwar	: 2335408	Guntur	: 2218244	Ankleshwar	: 221165
Udaipur	: 2485119	Bangalore	: 22223219	Vapi	: 2401874
Bhiwadi	: 220986	Chennai	: 25287119	Baroda	: 2480970
Kota	: 2391378	Coimbatore	: 2346743	Rohtak	: 231382-83
Pati	: 227303	Tirupur	: 2208766	Panipat	: 2670768
Bikaner	: 2520752	Erode	: 2224250	Gurgaon	: 2212260
Balotra	: 220472	Noida	: 5320274	Karnal	: 3208400

Service in all Hariyana, A.P., Rajasthan, Gujarat, Punjab, Noida, Telagana
MUMBAI ALL STATION DELIVERY & BOOKING & DELIVERY RETURN.

H.D. RATHI
CHAIRMAN

S.L. BHOOTRA
MANAGING DIRECTOR

WITH BEST COMPLIMENTS FROM:

Oriental Publishers & Distributors Pvt. Ltd.

(Nurturing Quality Education)

myschoolbookstore.in

AAKASH MAHESHWARI
CEO

SANJEEV SHARDA
DIRECTOR

Regd. Office & Sales Office :
17, Bhawani Dutta lane, Kolkata - 700073
orientalpublishers@ymail.com
9830052649

पृष्ठ १८ से... की चर्चा सामने आयी और कहा गया कि यह सभा त्याग मूर्ति विधवाओं की फिर से विवाह न करने की सद्‌वृत्ति को अभिनंदनीय मानती है तथापि आज का विषम समय विधवाओं की बेहद बढ़ी हुई संख्या एवं छोटी-छोटी उम्र पर हुई विधवाओं का काल्पनिक वैधव्य, इनकी ओर ख्याल करके राय देती है कि यदि उनकी इच्छा हो तो बाल विधवाओं का फिर से विवाह होने में समाज विरोध न करे, इतना ही नहीं वरन् ऐसी विधवाओं के माता-पिता तथा पालकों का कर्तव्य है कि वे स्वयं प्रयत्न कर उनका फिर से विवाह कर दें। विधवा विवाह का समर्थन करने वाली संस्थाओं में 'माहेश्वरी महासभा' का स्थान प्रथम पंक्ति में था।

भारत विरोधी नीतियों की भर्त्सना

स्वाधीनता आंदोलन के देशव्यापी प्रभाव के अनुरूप महासभा ने अपनी कार्यप्रणाली जारी रखी और उसी परिप्रेक्ष्य में महासभा का ग्यारवां अधिवेशन १९३४ में अजमेर में आयोजित हुआ। अध्यक्ष जी ने महासभा के राष्ट्रीय दृष्टिकोण की ओर प्रतिनिधियों का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि महासभा माहेश्वरी समाज की सर्वांगीण उन्नति के साथ ही भारत की राष्ट्रीय उन्नति में भी सहायता पहुंचा रही है, जिस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय उन्नति के लिए पृथक-पृथक राष्ट्रों की उन्नति आवश्यक है, उसी प्रकार राष्ट्रीय उन्नति के लिए भी अलग-अलग जातियों की उन्नति भी आवश्यक है क्योंकि इससे कार्य बंट जाता है और बंटा हुआ कार्य शीघ्र सरलता से किया जाता है।

अर्न्तजातीय विवाहों पर विचार

महासभा का बारहवां अधिवेशन १९३८ को कानपुर में हुआ, इस अधिवेशन का उद्‌घाटन करते हुए तपोधन श्री कृष्णदासजी जाजू ने अपने पूर्वजों की प्रगतिशीलता की याद दिलायी और कहा कि राजपूताने की जितनी वैश्य जातियां हैं, वे मूल स्रोत में क्षत्रिय थीं, ऐसा मालूम होता है कि हमारे पूर्वज भी राजपूत थे, फिर वैश्य हुए। संभव है उस समय बौद्ध धर्म या जैन धर्म का प्रभाव पड़ा हो, पर यह बात निश्चित है कि हमने वैश्य धर्म स्वीकार किया, जैसे भी यह घटना घटी होगी, हमारे पूर्वजों का यह काम हिम्मत का रहा है, यहां हम छोटी-छोटी बातों में परिवर्तन करने से घबराते हैं, वहां एक वर्ण को छोड़कर दूसरे वर्ण को ग्रहण करना कितना कठिन कार्य है, यह आप सहज में समझ सकते हैं। जागाजी श्री राधेश्याम-निहालचंद भीलवाड़ा वालों की बहियां भी बताती हैं कि उसके बाद भी बहुत सी क्षत्रिय जातियां हममें आकर मिलीं। यह बात खांप और नखों से सिद्ध होती है। सह विश्लेषण शक्ति उस समय हमारे भीतर थी और हमारे पूर्वजों ने इस शक्ति के बल पर बड़े-बड़े कार्य किये। हाल में कोलवार प्रकरण में हमारे समाज की फिर परीक्षा हुई। प्रश्न था कि कोलवार माहेश्वरी हैं या नहीं? महासभा ने तब निर्भीकता **शेष पृष्ठ २१ पर...**

जय उमा महेश जय भारत जय उमा महेश

माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति दिवस महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको हार्दिक शुभकामनाएँ

सर्वे भवन्तु सुखिन:

Shyam Baheti
Mob: 9391038450

Manoj Baheti
Mob: 9391037995

BAHETI STEEL TRADERS

Stockist in: TATA TISCON, Radha (T.M.T), JAIRAJ, DEVASHREE TMT BAR

H.O.: 3-1-336, Esamia Bazar, Hyderabad, Telangana, Bharat - 500 027
Ph: (0) 24652539, 24656753, 24653542, 24653543 (R) 24656631, 24653233
B.O.: Nacharam, Hyderabad Karmanghat, Hyderabad

कर्म की भूमि पर किस्मत का फूल खिलता है।
नसीब अगर बुलंदी पर हो तो ही माहेश्वरी में जन्म मिलता है। महेश नवमी के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

Bansidhar Rathi

IMPERIAL® TEXTILE

DYEING & PRINTING WORKS

Dhoraji Road, Jetpur, Gujarat, Bharat- 360 370,
Phone - 02823-222301, 221011,
Fax: 02823-222310 (R) 02823-221601, 220707
Mobile: 09824213506
Email: imperialtex@yahoo.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पृष्ठ २० से... का परिचय देते हुए मान लिया कि कोलवार माहेश्वरी हैं। महासभा भले ही सुधार मार्ग पर दौड़कर अग्रसर न हुई हो, पर आगे कदम रखकर पीछे नहीं मुड़ी।

अन्तर्जातीय संबंध खुले

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा का तेरहवां अधिवेशन 'सूरत' में १९४० को हुआ। उपस्थिति एवं प्रगतिशील विचारों की दृष्टि से यह बहुत ही सफल रहा। देश के कोने-कोने से माहेश्वरी बंधु इस अधिवेशन में सम्मिलित होने पहुंचे और समाज के अलग-अलग समुदायों के मिलन रूपी भागीरथी में अवगाहन करके वे कृतार्थ हुए। इस अधिवेशन के अध्यक्ष जी ने भारत की देशी रियासतों के निरंकुश शासन की आलोचना करते हुए कहा की आज यहां की प्रजा अपने राजनीतिक अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही है। देशी राज्यों की प्रजा अब जाग उठी है और वह अधिक समय तक आगे निरंकुश शासन प्रणाली

बर्दाश्त करना नहीं चाहती। देशी राज्यों में जारी आंदोलन को हमारे समाज ने काफी सहयोग दिया है। हमारी महासभा ने आज तक कांग्रेस के आदर्शों और सिद्धांतों के अनुरूप कार्य किया है। वह भी मानी हुई बात है कि राष्ट्र की स्वतंत्रता एवं सम्मान की रक्षा के लिए कांग्रेस जो नीति निश्चित करेगी, माहेश्वरी महासभा और माहेश्वरी समाज अन्य समाजों की तरह उस पर श्रद्धापूर्वक अमल करेगा। मेरा यह निश्चित मत है कि जहां राष्ट्रहित की रक्षा और सम्मान का प्रश्न उपस्थित हो, वहां हमें अपने जातिहित को छोड़कर राष्ट्रहित की रक्षा करनी चाहिए।

इस अधिवेशन में राष्ट्रोन्नति के कार्य में जुटने, बेकारी दूर करने हेतु अखिल भारतीय चरखा संघ द्वारा प्रमाणित खादी अपनाने और यथाशक्ति ग्रामोद्योग वस्तुओं का उपयोग करने से संबंधित प्रस्ताव हुए। इनमें सबसे अधिक आकर्षित करने वाला प्रस्ताव यह हुआ कि जैसलमेरी, पोकरणी, बीकानेरी, कोलवार, नागौरी, गुजराती, कच्छी, सिंधी आदि समुदायों में आपस में विवाह संबंध करने में किसी प्रकार की आपत्ति न समझी जाये। साथ ही महासभा ने माहेश्वरी भाइयों से प्रार्थना की कि वे भिन्न-भिन्न समुदायों में पारस्परिक विवाह संबंध की संकीर्णता नष्ट करने में सहयोगी बनें।

'भारत' की संकटपूर्ण स्थिति में सहयोग

'सूरत' अधिवेशन के बाद देश की राजनीतिक स्थिति बहुत ज्यादा उथल-पुथल वाली रही। १९४१ में महात्मा गांधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह आरंभ किया था, जिसमें द्वितीय महायुद्ध तथा अंग्रेज सरकार विरोधी प्रचार करते हुए कार्यकर्ता बड़ी संख्या में गिरफ्तारियां दे रहे थे। ८ अगस्त १९४२ को महात्मा गांधी ने 'भारत छोड़ो' का नारा दिया और जनता से अनुरोध किया कि अंग्रेजी शासन की दासता का अंत करने हेतु आगे आयें। आंदोलन के समाचार बिजली की तरह सारे देश में फैल गये। अंग्रेज सरकार ने राष्ट्र के सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिये। धूत जी की अनुपस्थिति में तपोधन जाजू जी को अध्यक्ष का स्थान ग्रहण करने की प्रार्थना की गई, किन्तु वे **शेष पृष्ठ २२ पर...**

पृष्ठ २१ से... भी ९ सितंबर को गिरफ्तार कर कृष्ण मंदिर भेज दिये गये। जाजू जी के बाद श्री ब्रज वल्लभदास जी मूंदड़ा ने महासभा के सभापतित्व का भार वहन किया। उनकी कार्यवधि में १९४६ में चौदहवां ग्वालियर अधिवेशन आयोजित हुआ।

अधिवेशन में सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक प्रस्ताव स्वीकृत हुए। प्रस्तावों में जो भावना व्यक्त हुई, वह इस प्रकार है-

- १.महासभा अंग्रेज सरकार की दमन नीति की निंदा करती है
- २.ब्रिटीश सरकार से स्वराज्य प्राप्ति के संबंध में कांग्रेस द्वारा होने वाली समझौता वार्ता का महासभा सम्मान करती है और साथ ही यह भी चेतावनी देना चाहती है कि पाकिस्तान की मांग कदापि स्वीकृत न की जाये
- ३. अन्न की कमी के कारण हो रहे 'काला बाजार' को देखकर महासभा ने चिंता व्यक्त की और समाज के बंधुओं से अनुरोध किया कि वे काला बाजार की प्रवृत्ति से बचें तथा बदली हुई परिस्थिति में अपने राष्ट्रीय कर्तव्य का दृढ़ता से पालन करें, ताकि संकटपूर्ण खाद्य स्थिति को सुधारने में सहयोग हो सके
- ४. महासभा ने समाज से व्यापार के आधुनिक तरीकों और साधनों को अपनाने का आग्रह किया
- ५.बढ़ती हुई वर विक्रय की प्रथा पर चिंता व्यक्त करते हुए इस निदंनीय कार्य को छोड़ने का अभिभावकों से अनुरोध किया गया और समाज के अविवाहित युवकों से अपील की गयी कि वे इस प्रकार के अवांछनीय और लांछनप्रद कृत्य में सहयोग न दें
- ६.सिंध में वहां के शासकों के अत्याचार से पीड़ित सिंधी समाज के प्रति माहेश्वरी भाइयों ने अपनी सहानुभूति प्रकट की।

ओंकारेश्वर - मध्य प्रदेश

स्वर्ण जयंती के रूप में आयोजित ग्वालियर अधिवेशन में इस बात पर गहराई से विचार हुआ कि जहां पहले महासभा को कन्या विक्रय का विरोध करना पड़ रहा था, वहां अब वर विक्रय की समस्या सामने आ गई है। प्रतिनिधियों ने इसी कारण चिंता व्यक्त की कि समाज में दहेज के कारण कन्याओं के लिए सुयोग्य वर मिलने कठिन हो गये हैं। अधिवेशन में सर्वसम्मति से यह मान्य किया गया कि समाज को वर विक्रय का खुला विरोध करना चाहिए। महासभा ने देश के नेताओं को भी सचेत किया कि वे भारत का विभाजन न होने दें।

नवनिर्माण का संकल्प : १५ अगस्त १९४७ को भारत आजाद हो गया। आजादी का आनंद करोड़ों देशवासियों के लिए बहुत सुखकर नहीं रहा, क्योंकि देश विभाजित हो गया और हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के नाम पर होने वाले हिन्दू-मुस्लिम दंगों ने शांतिप्रिय नागरिकों का सुख-चैन छीन लिया, देश की सारी शक्ति साम्प्रदायिक उपद्रवों को शांत करने तथा उजड़ कर आये परिवारों को बसाने में लगी। स्वयंसेवी सेवाएं भी अपने अलग-अलग होने वाले कार्यक्रम छोड़कर पुर्नवास के काम में **शेष पृष्ठ २३ पर...**

माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति दिवस महेश नवमी के
पावन पर्व पर आप सबको हार्दिक शुभकामनाएँ

ॲड. मोतीसिंह मोहता
विशेष निमंत्रित सदस्य महाराष्ट्र प्रदेश भा.ज.पा.
सदस्य व मा.अध्यक्ष बार कौन्सिल ऑफ महाराष्ट्र ॲण्ड गोवा

ॲड. हेमंत मोहता
अध्यक्ष : बार असोसिएशन, अकोला.
अध्यक्ष: राजस्थानी युवा प्रकोष्ठ अकोला
उपाध्यक्ष: भाजपा विधी आघाडी महाराष्ट्र
मा. उपाध्यक्ष: विदर्भ प्रा माहेश्वरी युवा संघटन
मो. नं. 9422808600

- अध्यक्ष, दि बेरार जनरल एज्युकेशन सोसायटी, अकोला
- अध्यक्ष, महाराष्ट्र गौ सेवा संघ (विदर्भ प्रदेश)
- सदस्य, सिनेट संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ, अमरावती
- अध्यक्ष, सार्वजनिक गणेशोत्सव मंडळ, अकोला
- अध्यक्ष, अकोला जिल्हा टेबल टेनिस असोसिएशन, अकोला
- अध्यक्ष, मालीपुरा एकता गणेशोत्सव मंडळ, अकोला (लालबागचा राजा)
- अध्यक्ष, भाटे क्लब, अकोला
- अध्यक्ष, मातृभक्त तपे हनुमान मंदिर, अकोला
- अध्यक्ष, तेलगू व्यायाम शाळा, अकोला
- अध्यक्ष, स्व. गोदावरीदेवी मोहता चॅरिटेबल ट्रस्ट, उदय नगर, जि. बुलढाणा
- संस्थापक अध्यक्ष, राजस्थानी सेवा संघ, अकोला

कार्यालय : जय प्लाझा, संतोषी माता मंदीरासमोर, अकोला - 444001
निवास : श्री शिवाजी पार्कचे बाजूला, अकोला. मोबा. 9422938600

महादेव महेश्वर की कृपा का चमत्कार,
माहेश्वरी समाज को जाने सारा संसार
महेश नवमी के पावन पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

सर्वे भवन्तु सुखिनः

AMBER®
Fashionable Textile Shoppee
CUTTACK - BHUBANESWAR

Manik Chand Mundhra
Mob: 9437017262

Sunil Kumar Mundhra
Mob: 9473014989

Manoj Kumar Mundhra
Mob: 9437027723

Ashok Kumar Mundhra
Mob: 9437047723

पृष्ठ २२ से... सहयोगी बन गयीं, ऐसी हालत में महासभा के अधिवेशन टलते गये, ठीक १५ वर्ष बाद १९६१ में महासभा का पन्द्रहवां अधिवेशन दिल्ली में हुआ। अधिवेशन में शरीक होने के लिए इन्दौर से नवयुवकों की टोली साइकिल यात्रा कर गांव-गांव में माहेश्वरी भाइयों को आमंत्रित करती हुई दिल्ली पहुंची जिसका बहुत अच्छा परिणाम निकला। जगह-जगह से नये चेहरे, नया उत्साह और नया संकल्प लिए अधिवेशन में भाग लेने लोग दिल्ली पहुंचे। दो हजार से अधिक प्रतिनिधियों एवं एक हजार से अधिक दर्शकों की उपस्थिति में यह अधिवेशन दिल्ली के रामलीला मैदान में हुआ, जिसमें नवनिर्माण का संकल्प ध्वनित हुआ। अध्यक्षजी ने सबकी भावनाओं को अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि प्राचीन भारत में चातुरवण्य व्यवस्था थी, उसके शिथिल हो जाने से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के स्थान पर हजारों जातियां, उपजातियां हो गयी थी। जातिवादी संकीर्णता के चलते राष्ट्रीय एवं मानववादी आस्थाओं को आघात पहुंचा तथा आपसी मतभेद बढ़े, इसलिए नवनिर्माण का तकाजा है कि हम गुणों पर आश्रित जाति व्यवस्था को मान्य करें, जिससे देश एक सूत्र में संगठित रह सके।

रामेश्वर - तमिलनाडु

आजाद भारत के नागरिकों की मानसिक दुर्बलताओं की ओर इंगित करते हुए अध्यक्षजी ने कहा कि आत्मविश्वास और स्वावलम्बन की भावना छोड़ने की वजह से हम प्रत्येक कार्य में अपने से भिन्न ईश्वर, देवी-देवता, भूत-प्रेत, ग्रह-नक्षत्र आदि अदृश्य कल्पित शक्तियों का आश्रय लेने लगे हैं जो कि ठीक नहीं है। अंधविश्वास तथा सामाजिक रूढ़ियों का परित्याग किये बिना स्वाधीन देश में हम नवनिर्माण की आधार शिला नहीं रख पायेंगे। अध्यक्षजी ने सामाजिक सुधारों के लिए महासभा द्वारा किये जा रहे प्रयत्नों की चर्चा करते हुए दहेज की कुप्रथा पर प्रकाश डाला और कहा कि युवक दहेज को जहर का प्याला समझें और जहां दहेज मांगा जाता हो, वहां कन्याएं अपना विवाह करने से जाजू ट्रस्ट की महत्वपूर्ण योजना का भरपूर स्वागत हुआ, इसके लिए अपेक्षित राशि तत्काल मिल गयी। कार्य के अनुरूप और राशी मिलते जाने से इस ट्रस्ट ने अनेक उल्लेखनीय कार्य किये जो कि आज भी कर रहा है, यह ट्रस्ट एक प्रकार का शुद्ध सामाजिक कोष है।

दिल्ली अधिवेशन में लघु उद्योगों के प्रचार के लिए महासभा ने 'औद्योगिक ब्यूरो की स्थापना' का भी निश्चय किया। इस प्रकार निश्चयात्मक भूमिका में दिल्ली अधिवेशन की कार्यवाही नवनिर्माण का संकल्प क्रियान्वित करने की सफल संयोजना के साथ सम्पन्न हुई।

व्यावसायिक क्षेत्र में आगे बढ़ने का अभियान : महासभा का १६ वां अधिवेशन १९६७ को बीकानेर में हुआ, इस अवसर **शेष पृष्ठ २४ पर...**

पृष्ठ २३ से... पर अधिवेशन स्थल पर पहली बार लघु औद्योगीक प्रदर्शनी लगायी गयी। प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए राजस्थान के तत्कालीन उद्योग मंत्री ने माहेश्वरी समाज के उद्योगपतियों से अनुरोध किया कि वे राजस्थान में अपने उद्योग-धंधे स्थापित करें, सरकार उन्हें सब प्रकार की सुविधाएं प्रदान करेगी।

बीकानेर अधिवेशन में समाज के बंधुओं से अपना रहन-सहन सादा और आडम्बररहित रखने तथा अपने वैभव का प्रदर्शन न करने की अपील की, साथ ही यह भी अनुरोध किया कि वे अन्य प्रदेशों की भांति राजस्थान में भी अपने उद्योग धंधे स्थापित करें।

जातीय संगठनों में रूचि लेने वालों की कमी होती देखकर अध्यक्ष महोदय ने युवकों से आग्रह किया कि वे इन संगठनों में सक्रिय हिस्सा लें, अपने इस बात का खंडन किया कि जातीय संगठन राष्ट्रीय प्रगति के लिए उपयोगी नहीं है। राष्ट्र की बहुमुखी प्रगति को न्याय देने के लिए जरूरी है कि प्राथमिक इकाई के रूप में जातीय संगठनों को प्रभावी बनाया जाए, उनका उद्देश्य संकीर्ण हितों की रक्षा करना नहीं, वरन् राष्ट्र के हित में कार्य करना है। महासभा ने दहेज दिखावा आदि के विरोध में निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया:

'समाज में विवाह संबंधों के अवसर पर किए जाने वाले ठहरावों के विभिन्न रुपों को महासभा सदा हीन दृष्टि से देखती आई है और इनमें आमूल परिवर्तन करने हेतु प्रयत्नशील है। माहेश्वरी महासभा का अधिवेशन समाज को पुन: सावधान करता है कि वह ठहराव और विवाह के समय किए जाने वाले दहेज के आदान-प्रदान तथा प्रदर्शन का तुरंत अंत करे, ताकि सभी वर्ग के लोगों को विवाह जैसा आनंदमयी प्रसंग भारस्वरूप न मालूम हो।'

काशी विश्वनाथ - उत्तर प्रदेश

बीकानेर अधिवेशन ने एक प्रस्ताव द्वारा बाल विवाह प्रतिबंधक कानून-शारदा एक्ट के प्रणेता स्व.दीवान बहादुर हरविलास जी शारदा की जन्म शताब्दी ३ जून १९६८ को मनाने का निश्चय किया, इसी प्रकार महासभा की नियमावली के संशोधित प्रारूप को स्वीकृत और क्रियान्वित करने का अधिकार भी कार्यकारी मंडल को दिया।

सर्वांगीण विकास के लिए पंचसूत्री कार्यक्रम : महासभा का सत्रहवां अधिवेशन सन् १९७२ में कलकत्ता में हुआ, इस अधिवेशन में गंभीर विचार चर्चा के पश्चात् समाज के सर्वांगीण विकास के लिए पंचसूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत हुआ, जिसमें निम्नलिखित विषयों का समावेश है-

- ⇨ सामाजिक नियम तथा आचरण
- ⇨ महासभा के संगठन का विस्तार
- ⇨ आर्थिक मार्गदर्शन और कार्यक्रम
- ⇨ शैक्षणिक दिशाएं एवं कार्य
- ⇨ सांस्कृतिक मार्गदर्शन

कलकत्ता अधिवेशन मुख्यत: समाज को क्रियाशील बनाने की दृष्टि से बहुत ही प्रभावशाली रहा। प्रतिनिधियों ने स्थान-स्थान पर स्थानीय संस्थाएं खड़ी करने, प्रांतीय क्षेत्रीय कार्यकर्ता सम्मेलन करने, प्रशिक्षण सत्र चलाने आदि की प्रेरणा प्राप्त की, सबको यह एहसास हुआ कि धनाभाव के कारण समाज की एक भी लड़की शिक्षा से वंचित क्यों रहे? हर लड़की कम से कम मैट्रिक व लड़का ग्रेजुएशन तक की शिक्षा अवश्य प्राप्त करे। समाज के लोगों ने भी महसूस किया कि वे विविध शिल्प, कला और उद्योग का प्रशिक्षण प्राप्त कर न केवल स्वयं स्वावलंबी बनें, वरन् दूसरों को भी स्वावलंबी बनाने में सहभागी रहें। शारीरिक श्रम पर आधारित व्यवसाय, रोजगार या नौकरी को हीन दृष्टि से न देखें, इसके अलावा साहित्य, खेलकूद, अभिनय, नाटक, लेखन, वाद-विवाद प्रतियोगिता और कला आदि क्षेत्र में भी सबको आगे बढ़ाने का संबल मिला। कलकत्ता अधिवेशन में एक और महत्वपूर्ण अध्याय शुरू हुआ, जिसके अनुसार समाज के वयोवृद्ध लोगों को अभिनंदित किया गया, बड़े बुजुर्गों के प्रति आदरभाव रखने की यह परिपाटी सभी लोगों ने पसंद की।

कलकत्ता अधिवेशन ऐसे समय में हुआ, जब राजस्थान व गुजरात में सूखा के कष्टों से जनता त्रस्त थी, इसी कारण विशेष अपील कर माहेश्वरी बंधुओं से आग्रह किया गया कि वे सूखाग्रस्त क्षेत्रों की जनता की सहायता करें व मूल्यों को न बढ़ने दें। अपनी सर्वतोमुखी प्रगति व विकास **शेष पृष्ठ २५ पर...**

मल्लिकार्जुन-आंध्र प्रदेश

जय महेश जय भारत जय महेश

महेश नवमी पर्व पर सभी राजस्थान वासियों को

हार्दिक शुभकामनायें

सर्वे भवन्तु सुखिनः

S B Bhutra

Mob: 93310 55579

Advocate & Tax Consultants

● Chamber ●
4, Synagogue Street, 5th Floor, Room No. 505,
Kolkata, West Bengal, Bharat - 700001
Email: sbbco@reddiffmail.com

● Residence ●
18/1, Sarat Bose Road, 2nd Floor, Sumangal Apartment,
Near Nepal Sweet, Kolkata, West Bengal, Bharat - 700020
Ph: 2240 5238/5955, 2486 4245, 3052 2239

पृष्ठ २४ से... के लिए स्नेहसूत्र में सबको आबद्ध करने की व्यावहारिक योजना पाकर सबने महसूस किया कि वे अपनत्व अभिवृद्धि करेंगे और समाज के समाधान के अनुरूप आचरण करेंगे, ताकि उनके व्यवहार से अन्य लोग भी प्रेरणा प्राप्त कर सकें, कहने की आवश्यकता नहीं कि इस अधिवेशन से प्रांतीय सभाओं को बल मिला और जगह-जगह बढ़-चढ़कर नवनिर्माण का कार्य किया जाने लगा।

नया मोड़ : महासभा का १८ वां अधिवेशन सन् १९७३ में नागपुर को आयोजित हुआ। सम्मेलन में भाग लेने लगभग ५००० प्रतिनिधि पहुंचे। सम्मेलन स्थल पर औद्योगिक प्रदर्शनी लगायी गयी, इस प्रदर्शनी में लगभग ७०-७५ औद्योगीक प्रतिष्ठानों ने अपने विविध उत्पादनों का प्रदर्शन कर समाज के लोगों को उद्योग क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए महाराष्ट्र के तत्कालीन उद्योग मंत्री ने माहेश्वरी समाज के उद्योगपतियों से अनुरोध किया कि वे महाराष्ट्र में औद्योगिक प्रतिष्ठान खड़े करें, वैसे प्रतिष्ठानों को महाराष्ट्र सरकार की ओर से हरसंभव सुविधाएं उपलब्ध कराने का भी आश्वासन दिया गया।

नागपुर अधिवेशन में महासभा के अंतर्गत महिला व युवा संगठनों को

व्यवस्थित रूप दिया गया और कार्यकारी मंडल के सदस्यों की संख्या दो सौ से बढ़ाकर चार सौ कर दी गई, इस प्रकार जहां सारे देश में केन्द्रीयकरण की भावना के साथ कार्य करने का अखंड प्रवाह चल रहा था, वहां नागपुर अधिवेशन महासभा को नया मोड़ देने वाला सिद्ध हुआ और इससे न केवल बुजुर्ग वरन् युवक और महिलाएं भी संपूर्ण उत्तरदायित्व के साथ समाज की प्रगति के लिए मोर्चा संभालने की भावना से कटिबद्ध हुई। **जय उमा महेश!**

श्री माहेश्वरी समाज की एक खांप मरदा! संक्षिप्त इतिहास

श्री ठाकरसी दास जी सोमानी सिरसा रहते थे बड़े ही धर्म प्रेमी व धनवान थे, परन्तु इनके कोई सन्तान नहीं थी, एक दिन सोमानी जी के यहाँ 3 साधु आये, सोमानी जी ने उनकी बहुत सेवा की,साधु प्रसन्न हो गये। इन साधुओं ने सोमाजी से कहा कि आपकी इच्छा हो सो मांगो, सोमाणी जी ने पुत्र की कामना की तो इन साधुओं में एक मौनी साधु थे, उसने पुत्र होने का आशिर्वाद दे दिया, दुसरे साधु ने कहा कि तुमने भुल कर दी, इसके संतान होना लिखा ही नहीं है, इस पर मौनी बाबा ने कहा कि मेरा वचन झूठा नहीं हो सकता, मुझे ही इसके यहां जन्म लेना पड़ेगा। मौनी बाबा ने कहा कि तुम्हें पुत्र होगा, उसका नाम सुद्यड रखना, उसका विवाह मत करना, सोमाणी जी ने कहा ठीक है।

कुछ समय बाद श्री सोमाणी जी के पुत्र जन्मा, उसका नाम सुदयड रखा गया, जब सुद्यड युवा हुआ तो सम्बन्ध आने लगे, परन्तु सोमाणी जी इन्कार करते रहे। एक बार सुद्यड अपने मित्र की बारात में गये थे, उस बारात में वर कुरूप था, इसलिये वधु पक्ष में आलोचना होने लगी तो वहां सुद्यड को समझा कर विवाह कर, दुल्हा बना दिया गया, सारे नेग–चार हो गये, दुल्हे को रात्रि विश्राम के लिए बुलाया गया, रात में वह सोये और सुबह दुल्हन जल्दी उठकर उसकी चुनड़ी जो वहां पड़ी थी उस पर लिख दिया-

सरसा शहर सुद्यड नर, पिता ठाकरसी दास
मिलन है तो आय मिलो, नहीं मिलन की आस

जब दुल्हन ने देखा तो उसे ध्यान आया कि क्या बात है? ऐसा क्यों लिखा? उसने अपने पिता से कह दिया कि उसके साथ दासी भेज दो, मैं तो तीर्थाटन जाऊँगी, उसके पिता ने ऐसा ही किया, फिर अपने पिता की आज्ञा लेकर रथ पर रवाना होकर सिरसा पहुंची, गांव के बाहर रथ रोककर उतर गई, उधर सुद्यड की मृत्यु हो गयी, उसे शमसान ले जा रहे थे, उसने गांव में श्री ठाकरसीदास के घर का पता पूछा तो लोगों ने सुद्यड की मुत्यु होने व शव को शमसान ले जाने का समाचार कहा, वह सीधी शमसान के ओर गई, रास्ते में सन्त तुलसीदास जी मिल गये, उसने सन्त को प्रणाम किया, तब सन्त ने उसे सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दे दिया, उसने कहा कि मेरे पति की मृत्यु हो चुकी है मैं सती होने जा रही हूँ, आपके आशीर्वाद का क्या होगा? सन्त उसके साथ हो गये और अर्थी को बीच में रोक कर कर मृत को आशीर्वाद दिया और भगवान से जिन्दा करने की प्रार्थना की। सुद्यड पुनः जीवित हो गया, मरकर वापिस जिन्दा हुए सुद्यड की सन्तान 'मरदा' कहलाये, सिरसा के रानी गांव में सन्त तुलसीदास जी की समाधि व पगल्या है, मन्दिर मे उनकी पूजा होती है। (सन्त तुलसीदास, **'गोस्वामी तुलसीदास' नहीं थे, दूसरे सन्त थे)**

तुलसी आवत देख सती निवायो शीश
तुलसी यह आशीष दी चुडला रहे अखीस
पति हमारा चला गया हम भी जीवन हार
तुलसी तेरा वचन का होसी कौन हवाल
तुलसी मुरदा मंगायकर धरयो शीश पर हाथ
हम तो कुछ जाने नहीं तुम जानों रघुनाथ

माहेश्वरी निशान - प्रतीक चिन्ह

ई.स. पूर्व ३१३३ में जब भगवान महेशजी और देवी महेश्वरी (माता पार्वती) के कृपा से 'माहेश्वरी' समाज की उत्पत्ति हुई तब भगवान महेशजी ने महर्षि पराशर, सारस्वत, ग्वाला, गौतम, श्रृंगी, दाधीच इन छः ऋषियों को माहेश्वरीयों का गुरु बनाया और उन पर माहेश्वरीयों को मार्गदर्शित करने का दायित्व सौपा। कालांतर में इन गुरुओं ने ऋषि भारद्वाज को भी माहेश्वरी गुरु पद प्रदान किया जिससे माहेश्वरी गुरुओं की संख्या सात हो गई, जिन्हें माहेश्वरीयों में सप्तर्षि कहा जाता है सप्तगुरुओं ने भगवान महेशजी और माता महेश्वरी की प्रेरणा से इस अलौकिक पवित्र 'माहेश्वरी निशान' और ध्वज का सृजन किया, इस निशान को 'मोड़' कहा जाता है जिसमें एक त्रिशूल और त्रिशूल के बीच के पाते में एक वृत्त तथा वृत्त के बीच ॐ (प्रणव) होता है माहेश्वरी ध्वज (Flag) पर भी यह निशान अंकित होता है। केसरिया रंग के ध्वज पर गहरे नीले रंग में यह पवित्र निशान अंकित रहता है, जिसे 'दिव्यध्वज' कहते है, गुरुओं का मानना था कि यह निशान और ध्वज सम्पूर्ण माहेश्वरियों को एकत्रित रखता है, आपस में एक-दुसरे से जोड़े रखता है। गुरुओं का मानना था की इस अलौकिक पवित्र माहेश्वरी निशान के दर्शन मात्र से ही हमारे भीतर दिव्य-सृजनात्मक उर्जा (एनर्जी) का संचार होता है, इसे देखते ही अनेक प्रेरक भाव मन में प्रस्फुटित होते हैं। माहेश्वरी निशान की उपस्थिति आपके घर, परिवार और जीवन में जो भी बुरी दृष्ट शक्तियां है उनका विनाश करती है, इस दीव्य निशान के दर्शन मात्र से ही जीवन में सौभाग्य का उदय हो जाता है, आजकल लगभग सभी माहेश्वरी पत्र-पत्रिकाओं, वैवाहिक कार्ड, दीपावली कार्ड, आमंत्रण-पत्र एवं अन्य कार्यक्रमों की पत्रिकाओं में इस निशान (प्रतीक चिह्न) का प्रयोग किया जाता है, यह निशान (प्रतीक चिह्न) माहेश्वरी परम्परा में श्रद्धा एवं विश्वास का द्योतक है, माहेश्वरी समाज के आन-बाण-शान का प्रतिक भी है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः

माहेश्वरी निशान का अर्थ

त्रिशूल धर्मरक्षा के लिए समर्पण का प्रतीक है, 'त्रिशुल' शस्त्र भी है और शास्त्र भी है। आततायियों के लिए यह एक शस्त्र है, तो सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र का यह एक अर्निवचनीय शास्त्र भी है। त्रिशुल विविध तापों को नष्ट करने वाला एवं दुष्ट प्रवृत्ति का दमन करने वाला है, जैसे ॐ स्वयं शिव स्वरुप है वैसे ही 'त्रिशूल' स्वयं शक्ति (आदिशक्ति माता पार्वती) स्वरुप है, त्रिशूल का दाहिना भाग सत्य का, बाया भाग न्याय का और बिच का प्रेम का प्रतिक भी माना जाता है। वृत्त के बिच का ॐ (प्रणव) स्वयं भगवान महेशजी का प्रतिक है, ॐ पवित्रता का प्रतीक है, ॐ अखिल ब्रम्हांड का प्रतीक है, सभी मंगल मंत्रों का मूलाधार ॐ है, परमात्मा के असंख्य रूप है उन सभी रूपों का समावेश ओंकार में हो जाता है। ॐ सगुण निर्गुण का समन्वय और एकाक्षर ब्रम्ह भी है, भगवदगीता में कहा है 'ओमित्येकाक्षरं ब्रम्ह'। माहेश्वरी समाज आस्तिक और प्रभु विश्वासी रहा है, इसी ईश्वर श्रध्दा का प्रतीक है- ॐ। माहेश्वरियों का यह गौरवशाली निशान बड़ा ही अर्थपूर्ण, पथ-प्रदर्शक और प्रेरणादायी है।

माहेश्वरी का बोधवाक्य- माहेश्वरीयों का बोधवाक्य' सर्वे भवन्तु सुखिन: माहेश्वरीयों की विचारधारा को, संस्कृति को दर्शाता है।

'सर्वे भवन्तु सुखिन:' अर्थात केवल माहेश्वरियों का ही नहीं बल्कि सर्वे (सभी के) सुख की कामना करने वाला तथा सत्य, प्रेम, न्याय का उद्घोषक, निशान सचमुच बड़ा ही अर्थपूर्ण है।

माहेश्वरी निशान का दर्शन अत्यंत मंगलमय है, इसे देखते ही आंतरिक शक्ति, आंतरिक उर्जा जागृत हो जाती है, इसे देखते ही अनेक प्रेरक भाव मन में प्रस्फुटित होते है।

उपयोग निर्देश : माहेश्वरी निशान (प्रतीक चिह्न) किसी भी विचारधारा, दर्शन या दल के ध्वज के समान है, जिसको देखने मात्र से पता लग जाता है कि यह किससे संबंधित है, परंतु इसके लिए किसी भी निशान (प्रतीक चिह्न) का विशिष्ट (यूनीक) होना एवं सभी स्थानों पर समानुपाती होना बहुत ही आवश्यक है। यह भी आवश्यक है कि प्रतीक का प्रारूप बनाते समय जो मूल भावनाएँ इसमें समाहित की गई थीं, उन सभी मूल भावनाओं को यह चिह्न अच्छी तरह से प्रकट करता है। इस निशान (प्रतीक चिह्न) को एक रूप छापने के लिए अब इसके फॉरमेट का विकास कर लिया गया है, इस फॉरमेट के उपयोग से इसे सही स्वरूप में छापा जा सकेगा, सुनिश्चित कर लें कि इसके सही प्रारूप/फॉरमेट का उपयोग हो रहा है।

माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति दिवस
महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको
हार्दिक शुभकामनाएँ

बंग परिवार

महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

II JAI SHRI KRISHNA II

RASHMI ENTERPRISES

"Excellence is not an act, but a habit"

Authorized Distributor's

West Coast Paper Mills Ltd., Kolkata
Kuantum Paper Ltd., Chandigarh
Satia Industries Ltd., Delhi
DSG Papers Pvt. Ltd., Patiala

4546/I-2/16, 3rd Floor, Ansari Road
Darya ganj ,New Delhi – 110002
Near Kastle Guest House, Opp. Happy Public School
Tel: +91-11-43503793, 41614583 , +91- 99997 25001
Email: bahety2@gmail.com

Courtesy

Vinod Bahety

PH:+91 98100 26840

अग्रबंधु महिला समिति द्वारा खाने-पीने की वस्तुओं का वितरण

मुंबई: अग्रबंधु सेवा समिति, मुंबई सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यों के लिए सदैव अग्रणी भूमिका निभाती रही है। जरूरतमंद लोगों की मदद करना, त्योहारों पर धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करना और भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना संस्था की मुख्य गतिविधियों में शामिल रहा है, इसी क्रम में अग्रबंधु सेवा समिति (महिला समिति), मुंबई द्वारा संस्थाध्यक्ष अमरीशचंद अग्रवाल, ट्रस्टी लक्ष्मी नारायण अग्रवाल की प्रेरणा, मानद मंत्री उदेश अग्रवाल, कोषाध्यक्ष गोपाल दास गोयल के मार्गदर्शन, महिला समिति अध्यक्षा सुधा अग्रवाल व उपाध्यक्षा ज्योति अग्रवाल, स्नेहलता अग्रवाल और प्रेमलता अग्रवाल के निर्देशन में ३ मई २०२५ को मालाड स्थित चिंचोली हनुमान मंदिर परिसर में जरूरतमंद लोगों को खाने-पीने की वस्तुओं का मुफ्त वितरण किया गया।

वैशाख महिने की तपती गर्मी में जब हर प्राणी का बुरा हाल हो जाता है, ऐसी स्थिति में प्यासे लोगों को पानी की चंद बूंदें भी बड़ी राहत देती हैं। संस्था की महिला समिति की कोषाध्यक्ष अनीता अग्रवाल, संयुक्त मंत्री बबीता गोयल, सविता अग्रवाल और सभी कार्यकारिणी सदस्याओं ने इस गर्म मौसम में सड़क चलते लोगों को राहत देने के लिए फ्रूटी, पानी की बोतल के साथ बड़ा पाव और फल का बड़ी मात्रा में वितरण करने के बाद सभी का आभार व्यक्त किया, इस दौरान नूतन अग्रवाल, जयश्री अग्रवाल, पिंकी अग्रवाल, सीमा अग्रवाल, सीमा गुप्ता, जया गोयल, नीता जैन और विनीता अग्रवाल ने भी बढ़ चढ़कर भाग लिया। सड़क पर चलने वाले लोगों, वाहन में सामान ढोने वाले ड्राइवरों व मजदूरों, ऑटो रिक्शा चालकों व अन्य मेहनतकश लोगों के पास जा-जाकर संस्था की सभी सदस्याओं ने खाद्य एवं पेय पदार्थों का वितरण किया। भरी गर्मी और रिसते पसीने के बीच उनका उत्साह व जोश देखने लायक था। सुधा अग्रवाल ने 'मेरा राजस्थान' पत्रिका को बताया कि उनकी संस्था इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन अक्सर करती रहती है, प्राणीमात्र सेवा से लोगों के चेहरे में जो खुशी और संतुष्टि का भाव देखने को मिलता है, उससे सच्चा सुकून व गहरी आंतरिक प्रसन्नता हमें प्रदान करता है।

दीनदयाल मुरारका को दादा साहेब फाल्के पुरस्कार प्रदान किया गया

मुंबई: दादा साहेब फाल्के फिल्म फाउंडेशन के तत्वाधान में १५६ वां दादा साहेब फाल्के जयंती समारोह का आयोजन किया गया, इस अवसर पर डॉ. दीनदयाल मुरारका अध्यक्ष, दीनदयाल मुरारका फाउंडेशन को 'दादा साहेब फाल्के लेखक पुरस्कार' प्रदान किया गया, यह पुरस्कार प्रसिद्ध गायक उदित नारायण के हाथों से प्रदान किया गया। कार्यक्रम में प्रसिद्ध गायक सोनू निगम, अन्नू कपूर, उदित नारायण, शान, गीतकार समीर देसाई, अभिनेत्री मंदाकिनी, कवि गौरव शर्मा एवं फिल्म जगत के कई मशहूर हस्तियों को भी दादा साहब फाल्के फिल्म फाउंडेशन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन निता वाजपेई ने किया।

माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति दिवस
महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको
हार्दिक शुभकामनाएँ

पुरुषोत्तमदास सोनी
मो.: 9391002981

शिव रतन 5-5-35/238/4, प्लॉट नंबर 32, मैत्री नगर,
कुकटपल्ली, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत-500072
फोन: 040-23075236

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जश्न जीत का...

संशय नहीं अब और किसी को
जो संदेश मिला दुनिया को
जग में इतना मान मिता है
'भारत' परचम स्वीकार किया है
सबका कहना एक ही है
ना खेलो 'भारत' से अब तुम
'भारत' प्रेम की यही निशानी
दुश्मन करता पानी-पानी
ना छेड़ेंगे अब हम तुमको
क्षमा क्षमा अब हमको दे दो
गर्व करेगी दुनिया 'भारत' पर
अंदर घुसकर ऐसा मारा
कोई बचा नहीं है अब तक
दुआ मांगते कुछ कहते हैं
आओ हमको भी ले जाओ
अब तो कुछ भी नहीं बचा है
क्या करेंगे जिंदा रहकर
कब्ज़ा जितना कर सकते हो
मत चूको चौहान आज तुम
नक्शा बदल दो उस दुश्मन का
जिसने बर्बाद किया बरसों तक
हमनें जुल्म का प्रतिकार किया है
मानवता को सुलभ किया है
इतना मारेंगे अब हम तुमको
याद करोगे सात जनम तक
जो बोया था तुमने पाया
अपने कर्मों का फल भोगो तुम

-रामगोपाल मूंधड़ा, बैंगलोर
मो.: ९८२०८७३६८९, ९३४१८३३३५३

महेश जिनका नाम है, कैलाश जिनका धाम है,
देवों के देव महादेव को, हम सबका प्रणाम है...
महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

सावित्रीदेवी मंगलचन्द गग्गड़ फाऊन्डेशन

जसवंतगढ़,जयपुर,मुम्बई,लुधियाना

कर्म की भूमि पर किस्मत का फूल खिलता है।
नसीब अगर बुलंदी पर हो तो ही माहेश्वरी में जन्म मिलता है।
महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

Rajesh Kumar Bajaj

Mob.: 9434120224

New Marble Centre

10, Karbala Road, Panchanantala,
Berhampore, Dist. Murshidabad,
West Bengal, Bharat-742102

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

महादेव महेश्वर की कृपा का चमत्कार,
माहेश्वरी समाज को जाने सारा संसार
महेश नवमी के पावन पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

बसन्तकुमार लड्ढा

मो.: 9893072472

बॉम्बे फिल्म एक्सचेंज

१०१, रूद्राक्ष अपार्टमेंटए १६, मीरापथ, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत-४५२००१
फोनः (ऑ) ०७३१-२५४१३६७, (नि) ०७३१-२४९७११

माहेश्वरी मंडल द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन

मुंबई: ठाणे माहेश्वरी मंडल की ओर से भारत-पाकिस्तान तनाव के बीच शहीद हुए भारतीय जवानों को श्रद्धांजलि देने के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें लोगों ने रक्तदान किया, कार्यक्रम का उद्घाटन विधायक संजय केलकर और महेश तापड़िया ने किया, इस अवसर पर माहेश्वरी सभा महाराष्ट्र प्रदेश के प्रदेशाध्यक्ष मधुसूदन गांधी, दिनेश सोमानी ने विशेष रूप से उपस्थित होकर मंडल के सेवा प्रयासों की सराहना की, साथ ही सांसद नरेश म्हस्के, विधायक निरंजन डावखरे, पूर्व नगरसेवक भरत चौहान, राजस्थान प्रगति मंडल के सचिव वीरेंद्र रूंगटा, संजय चुडीवाल, प्रदीप गोयंका ने मंडल की सराहना की।

कार्यक्रम को सफल बनाने में मंडल अध्यक्ष सीए कमलेश साबू, सचिव विनोद जाखोटिया, कोषाध्यक्ष किरण जी, पूर्व अध्यक्ष डॉ. संतोष राठी, महासभा सदस्य राजू तापड़िया, उपाध्यक्ष ओमप्रकाश सोमानी, सहसचिव श्याम भूतड़ा, संदीप माहेश्वरी, परमेश्वर तापड़िया, मनमोहन मूंदड़ा, पराग बाहेती, हरीश कोठारी, अनिल कोठारी, राजेश चांडक और आनंद चांडक सहित महिला समिति की अध्यक्षा बबीता जाखोटिया, मंत्री मीनाक्षी भूतड़ा, सहसचिव सुनीता भूतड़ा, किरण राठी, हेमा लाहोटी और युवती समिति की सचिव रश्मि मूंदड़ा का सहयोग रहा।

माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति दिवस
महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको
हार्दिक शुभकामनाएँ

SURESH SOMANI
BA LLB
Mob.: 9437094409 / 7749008409

– Director –
S.K.ENTERPRISES
B.M.S.FUELS
SOMANI GROUP

Subash Chowk, Malkangiri, Odisha, Bharat - 764045
email: ssomani09@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

माहेश्वरी मंडल की नवगठित समिति का शपथ ग्रहण समारोह

मुंबई: ठाणे माहेश्वरी मंडल की नवगठित समिति का शपथ ग्रहण समारोह ठाणे के आर नेस्ट बैंक्वेट हॉल में संपन्न हुआ, इसमें मंडल अध्यक्ष के रूप में सीए कमलेश साबू, सचिव के रूप में सीए विनोद जाखोटिया, महिला समिति की अध्यक्षा के रूप में बबीता जाखोटिया, सचिव मीनाक्षी भूतड़ा, युवा समिति अध्यक्ष के रूप में सीए अर्पित नागोरी, सचिव सीए गिरिराज अजमेरा, युवती समिति अध्यक्षा के रूप में विजेता झंवर, सचिव रश्मि मूंदड़ा ने शपथ ली। ठाणे जिला माहेश्वरी सभा अध्यक्ष महेश सोनी की उपस्थिति में मंडल के पूर्व अध्यक्ष नारायणदास राठी, रामस्वरूप डांगरा, रंजन झंवर, राजेंद्र तापड़िया, डॉ. संतोष, समाज के वरिष्ठ सदस्य जेठमल डुडानी, हनुमान चांडक, बंसीलाल साबू, बृजमोहन मूंधड़ा, पुरुषोत्तम होलानी, परमेश्वर तापड़िया, भगवतीप्रसाद मूंधड़ा, मुकेश करवा, सुषमा तापड़िया ने नई कार्यकारिणी को शुभकामनाएं दीं।

माहेश्वरी परिवार की कुलदेवी

माहेश्वरी समाज-कुलदेवी

१.सेवल्या माता- माता जी का स्थान राजस्थान के भीलवाड़ा जिले की मांडल तहसील के ग्राम 'बागौर' में है। संवल्या माताजी का मंदिर अति प्राचीन है जो ब्राम्हणी माता के नाम से भी प्रसिद्ध है इस क्षेत्र के लोगों में माताजी के प्रति अटुट श्रद्धा है एवं लोगों की मन्नतें यहां से पूर्ण होती है।

२.बंधर माता- उदयपुर के 'चित्तौड़गढ' के रास्ते पर एयरपोर्ट रोड पर 'मोमार' गाँव से आगे १० किमी. दूर बायें हाथ की तरफ 'अकोला' जानेवाली सड़क पर 'तानागाँव' पड़ता है, इसी 'तानागाँव' की पहाड़ी पर मंदीर है, नवरात्री में नवमी के दिन यहाँ विशाल मेले का आयोजन होता है।

३.सिसणाय माता- माता जी का मंदिर 'मांडलगांव' (भीलवाड़ा) में बताया गया है, जानकारी उपलब्ध नहीं हो पाई है।

४.झीण माता (सीकर)- मंदिर के पुजारी जी के अनुसार सोमानी, जाजू, बजाज, काबरा, राठी, बिड़ला, तोषनीवाल, छापरवाला, तापाड़िया खांप वाले भी मानते हैं, 'सीकर' से २८ किमी. दूर दक्षिण अरावली गिरी में झीण माता का भव्य मंदिर प्राचीन ऐतिहासिक है।

५.बिसवन्त माता (जानकारी उपलब्ध नहीं)

६.चान्दसैण माता (चान्दसिणी माता)- अजमेर से ७० किमी. णालपुरा (टोंक) से १५ किमी टोडा रायसिंह रोड पर टोरडी ग्राम है, माता के दर्शनार्थ पधारें।

७.फलौदी माता-समदानी, सिंगी, तुलावटया, वियाल, जुजनोत्या, मालाणी, टुवाणी, गांधी नख वाले भी फौलादी माता को मानते है, मेडता रोड में फौलादी ब्रम्हाणी माता का मंदिर है।

८.संचाय माता- माता जी का मंदिर ओसियां (जिला जोधपुर) में है, भव्य ऐतिहासिक मंदिर है, जैन ओसवाल व अन्य समाजवाले भी मानते हैं।

९.अमल माता- श्री अमलमाता जी का मंदिर ग्राम 'रिछेड' में है। ३५० सीढियों के ऊपर भव्य विशाल मंदिर है, चार भुजाजी से 'रिछेड़' जाना पड़ता है।

१०.चामुण्डा माता- जोधपुर दुर्ग में चामुण्डा माताजी का भव्य मंदिर है, माताजी का एक अन्य मंदिर 'सोजत' स्थित एक पहाड़ी की गुफा में स्थित है।

११. लिकासण माता- लिकासण माता का मंदिर नागौर जिले के 'लिकासण' गांव में है, यह स्थान 'नागौर' से ७५ किमी. 'डीडवाना' से १८ किमी. 'छोटी खाटू' से ५ किमी. दूर है।

१२.मात्री माता- मात्री माता का स्थान नागौर जिले के 'खींवसर' गाँव में है, यहाँ पूजा नहीं होती है। मात्री माता के इस मंदिर में कोई प्रतिमा नहीं है, अपितु प्रतीक रूप से इस स्थान पर मात्री माता का स्थान है।

१३.दधीमति माता-पुजारी जी ने बताया कि कचौल्या, झखोटिया, इनाणी, लोया, गिलडा, पलोड खांप वाले भी कुल माता दधिमति को मानते हैं। 'गोठ मांगलोद' जिला नागौर में ''मां दधिमति शक्तिपीठ नाम से ऐतिहासिक प्रसिद्ध मंदिर है।

१४.सैणल माता-जानकारी उपलब्ध नहीं

१५.डेरूं माता- जानकारी उपलब्ध नहीं

१६.जजेसल माता- जानकारी उपलब्ध नहीं

१७.खींवज माता,पोकण (जैसलमेर)- इनका पोकरण के दक्षिण में ४कि.मी. दूर 'फलसूण्ड' बाडमेर रोड पर मंदिर तक पक्की सड़क है, खींवज माता ट्रस्ट पोकरण के नाम से बना हुआ है। नवरात्री में मेला भरता है तब दूर-दूर से यात्री आते है।

१८.मम्माय माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

१९.जाखण माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

२०.सांगल माता- मंदिर 'भादरिया' में स्थित है, यह स्थान एशिया प्रसिद्ध है, यहां अण्डर ग्राउण्ड लॉयब्रेरी है, जिसमें लाखों पुस्तके हैं तथा १५००० गायों की विशाल गौशाला है।

२१.विसु माता- विसु माता जी को बिसानी, जेठा भट्टड़, कुलधरिया, मेहरा नख वाले भी मानते हैं। 'जैसलमेर' के गडसीसर तालाब के पास मुक्तेश्वर मंदिर से आगे गडीसर आड (बन्धा) के पास मंदिर है।

२२.आशापुर माता- आशापुर माता का 'पोकरण' **शेष पृष्ठ ३४ पर...**

महेश नवमी पर्व पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Rajkumar Jhanwar
Mob: 9420335179 / 9324055471

SHREE BHAGWATI TEXTILE MILLS
Mfg. Of Course & Fine Count
All Grey Gabrics Finish Fabrics, Cloth Bag
9/45/58, Industrial Estate, Near Night college,
Ichalkaranji, Kolhapur, Maharashtra, Bharat - 416115
Email: jhanwarrajkumar27@gmail.com

श्री दाधीच परिषद कोलकाता द्वारा गंगासागर धाम में भवन का भूमि पूजन समारोह संपन्न

कोलकाता: श्री दाधीच परिषद कोलकाता का गंगासागर धाम में भवन निर्माण का भूमि पूजन बैशाख शुक्ल तृतीया 'अक्षय तृतीया' ३० अप्रैल २०२५ को हुआ, इसके पूर्व २९ अप्रैल २०२५ को परिषद की महिला समिति द्वारा माँ दधिमथी का सामुहिक संगीतमय मंगल पाठ हुआ। श्री दाधीच परिषद कोलकाता द्वारा अपनी भूमि पर ऐतिहासिक भूमि पूजन का आयोजन किया गया, समारोह की अध्यक्षता अखिल भारतवर्षीय दाहिमा (दाधीच) ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष श्री लक्ष्मी नारायण जी दाधीच ने की। समारोह में विशिष्ट अतिथि श्री महावीर जी भाभडा, वैद्य लक्ष्मण प्रसाद जी व्यास, श्री विष्णु जी दाधीच जयपुर, श्री कैलाश जी रतावा मकराना, श्री जगदीश जी मालोदिया खरेश, श्री गोविंद जी तिवाड़ी चेन्नई, श्री हरीश जी तिवाड़ी, श्री सीताराम जी शर्मा, गुरुजी, श्री राजेंद जी महंत, जयपुर एवं श्री अशोक जी शर्मा मुनीमजी इंदौर आदि उपस्थित थे। भवन के एक कमरे की अनुदान राशि ५ लाख बाबत कई उदारमना भामाशाहों ने घोषणा की। श्री दाधीच परिषद

कोलकाता के गंगासागर धाम भूमि पूजन समारोह के लिए किशन जी खटोड़ परिवार २.५१ लाख, कुंदन जी काकड़ा परिवार २ लाख, अशोक जी शर्मा मुनीमजी इंदौर १.११ लाख, सज्जन जी टेकरीवाल १.११ लाख, सुरेंद्र जी ओझा १.११ लाख, डॉ कमलकांता जी दाधीच जयपुर १.११ लाख, गोपाल कृष्णजी राजू जी तिवाड़ी १.११ लाख, अशोक जी पारीक १ लाख, आशीष मातादीन शर्मा १ लाख, भूपेंद्र जी मिश्रा २१०००, अरविंद जी गोटेचा, चेन्नई २१०००, वी पी भट्ट अजमेर ११००१ रूपये की सहयोग राशि दी। गंगासागर धाम भवन प्रकल्प में मां दधिमती की कृपा से अभी तक २० कमरों के लिए अनुदान की स्वीकृति मिली है।

वैद्य घासीराम जी व्यास परिवार, नंदलाल जी सुरेश ईनाणीया परिवार, हरि नारायण जी व्यास हैदराबाद, सीताराम जी शर्मा गुरुजी, देवकीनंदन जी गोठेचा परिवार, सुभाष जी शर्मा दिल्ली, राजकुमार जी दाधीच राउरकेला, अरविंद जी शर्मा, नागरमल जी काकडा परिवार, शंकर घोष, पुणे, पंडित लालचंद जी शर्मा परिवार, गोविंद जी तिवाड़ी, मद्रास, शिवचंद जी गोपाल तिवाड़ी, पवन कुमार अग्रवाल, नरेंद्र जी शर्मा किशनगंज, राजेंद्र जी महंत जयपुर, हरीश जी तिवाड़ी, सत्यनारायण जी जोपट कानपुर, मदनलाल जी विनोद ईनाणीया सुजानगड़, सत्यनारायण जी राजेंद्र दायमा, पंडित शंकर लाल जी शर्मा भागलपुर आदि उदारमना का श्री दाधीच परिषद कोलकाता हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

महेश जिनका नाम है, कैलाश जिनका धाम है,
देवों के देव महादेव को, हम सबका प्रणाम है...
महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Nandlal Saboo
Mob.:9830653525

Bikas Saboo
Mob.:8820593082

Prakash Saboo
Mob.:9831570637

Mukesh
Mob.:8100017314

PRAKASH TRADING & CO.
Manufacturer
Icon & Hero Kid, Baba Suit
25, Tara Chand Dutt Street, Kolkatta, Bharat-700073
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय महेश जय भारत जय महेश

कर्म की भूमि पर किस्मत का फूल खिलता है।
नसीब अगर बुलंदी पर हो तो ही माहेश्वरी में जन्म मिलता है।
महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

Kamal Gandhi
Mob: 9830043827

CF 305,Salt Lake City, Sec. 1, Near Swimming Pool,
Kolkata, West Bengal, Bharat -700064

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति दिवस
महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको
हार्दिक शुभकामनाएँ

S. L. Rathi
Managing Director

Shree Tube Mfg. co. Pvt. ltd.
Mfgrs. of Stainless Steel Tubes

Telefax : 0240-2555867, 2564084
Mobile : 09422206733 / 9225307133
E-mail : slrathi@shreetube.com

Works & Regd. Office :
D-4, M.I.D.C., Waluj, Aurangabad - 431 136.
Website : www.shreetube.com

कर्म की भूमि पर किस्मत का फूल खिलता है।
नसीब अगर बुलंदी पर हो तो ही माहेश्वरी में जन्म मिलता है।
महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

नरेन्द्र लाखोटिया
सचिव श्री माहेश्वरी सभा रांची
Mob.: 9142922750

न्यु माहेश्वरी रोड लायन्स, जालान रोड, अपर बाजार,
रांची, झारखंड, भारत-८३४००१

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

महेश नवमी पर्व पर
सभी राजस्थान वासियों को
हार्दिक शुभकामनायें

DEEPAK KUMAR BAJAJ
Chairman
Mob. 9415201978

JD BAJAJ GROUP

Agri Trading & Brokerage | Roller Flour Mills | Educational Institutions | Woven Sack Manufacturing | Warehousing

Office : C27/170, A-20C, Jagatganj,
Varanasi, Uttar Pradesh Bharat - 221002
Ph: +91 5422202251-53
Email: chairman@jdbajaj.com Website: www.jdbajaj.com

Res : Bajaj House, J13/ 93A-10 KMD, Cotton Mill,
Chowkaghat, Varanasi, Uttar Pradesh Bharat - 221001

पृष्ठ ३१ से... (जिला जैसलमेर) से ३किमी. शहर से दूर भव्य विशाल मंदिर है, मंदिर के सामने आशापुर माता धर्मशाला भी बनी हुई है।

२३.पाढाया माता- 'बीकानेर' में पाढाया माता का मंदिर पारीक चौक में स्थित है, मंदिर में ठहरने और रहने की व्यवस्था है। मंदिर में रोजाना पुजा अर्चना होती है।

२४.गायल माता- गायल माता मंदिर का जोधपुर के 'आसोप' में है। मंदिर का अ.भा. झंवर समाज का ट्रस्ट बना हुआ है, रहने और ठहरने की अच्छी सुविधा है।

२५.चावण्डा माता- चावण्डा माता का मंदिर जैसलमेर में १३ कि.मी. 'लिदरवा' (जैन तीर्थ मंदिर) के पास है। (चुन्धी गांव में मंदिर है) मंदिर में ठहरने और रहने की व्यवस्था है, बताते हैं कि श्री चवन ऋषि ने यहां पर तपस्या की थी।

२६.चानण माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

२७.सुषमाद माता- सुषमाद माताजी का मंदिर नागौर जिले के 'कुचेरा' ग्राम में है। पुष्कर व मेडता के बीच में 'कुचेरा' पड़ता है।

२८.भद्रकाली माता- भद्रकाली माता का मंदिर हनुमानगढ टाऊन से ७ कि. मी दूर है, यहां भव्य मंदिर बना हुआ है, मंदिर में ठहरने की व्यवस्था पुजारी जी करते हैं।

२९.सुजासन माता- माताजी का मंदिर नागौर जिले के 'परबतसर' में है, मंदिर में माताजी की दोनों समय सेवा-पूजा होती है।

३०.कल्याणी माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

३१.मूसा माता- यह 'दरक' खांप की कुल माता है, मंदिर व स्थान की जानकारी उपलब्ध नहीं है।

३२.खुंखर माता- माता जी का मंदिर नागौर जिले के 'तोषीना गाँव' में है। नागौर से ५० किलोमीटर वाया कोलिया पड़ता है। यहां श्री भगवानदास जी तोतला, जलगाँव द्वारा मंदिर व धर्मशाला का निर्माण कराया गया है, रहने और ठहरने की बहुत सुंदर व्यवस्था है, मंदिर भव्य व कलात्मक बना हुआ है।

३३.नौसर माता (पुष्कर), अजमेर- नौसर माताजी का मंदिर 'अजमेर' के समीप पर्वत के मध्य 'पुष्कर' से पहले प्रतिष्ठित है। नवदुर्गा के रूप में स्थापित नौसर मातजी की प्रतिमा वाला मंदिर करीब १२०० वर्ष से भी प्राचीन है।

३४.नागणैचा माता- नागणैचा माता का प्राचीन मंदिर 'बीकानेर' शहर निवासियों की आस्था का केन्द्र है। नवरात्रि में मेला लगता है।

३५.बिसला माता- 'फलौदी' शहर के भट्टडों के चौक में बिसल माताजी का भव्य मंदिर बना है, नवरात्रि में मेला लगता है।

३६.खाण्डल माता- मारवाड मूण्डवा जिला 'नागौर' में खाण्डल माता की ५०० वर्ष प्राचीन बंग खांप की कुल माता की प्रतिमा का सन्त श्री आत्माराम जी खाकी के दृष्टान्त द्वारा ज्ञान तालाब के प्रांगण में १३ अप्रैल २००२ को प्रकटय हुआ, जिसकी प्राण प्रतिष्ठा ११ अप्रैल २००३ को हुई, यह मूर्ति श्री नृसिंह मंदिर 'मूण्डवा' में स्थित है।

३७.माणुधणी माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

३८. नौशल्या माता- नागौर जिले के 'जायल' तहसील में नौशल्य माता का मंदिर है, इस मंदिर में प्रतिमा नहीं है। पूजारी जी ने बताया कि यहाँ अग्रवाला समाज के साथ खटौड खाँप वाले भी आते हैं।

३९.आशावरी माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

४०.मुन्दल माता- मुन्दल माता जी का मंदिर नागौर जिला के 'मुन्दियाड' गाँव में है, जो नागौर से २४ कि.मी. दूर है। ठहरने तथा रहने की अच्छी व्यवस्था है।

४१.जीवण माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

४२.आशापुरा माता- नाडोल जिला से ६० किमी. उदयपुर के रास्ते में 'नाडोल' जिला पाली पड़ता है। आसणी कोट के पास विशाल प्राचीन मंदिर है।

४३.डाहरी माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

४४.बागलेश्वरी माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

४५.बागलोद माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

४६.हिंगलाज माता- 'बीकानेर' के पास कोलायत से ३ कि.मी. की दूरी पर 'मढ' गाँव में हिंगलाज माता का पुराना ऐतिहासिक मंदिर सम्वत् १६४८ में बना हुआ बताते हैं।

४७.गारस माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

४८.धोलेश्वरी माता- धोलेश्वरी माताजी का मंदिर अलवर जिले के 'लक्ष्मणगढ' तहसील में 'वहलुकला' ग्राम के नजदीक पहाड़ी पर स्थित है, यह धोल पर्वत के नाम से जाना जाता है।

४९.भैंसादश्री माता- भैंसादश्री माता का मंदिर 'नीमच' सिटी के मीणा मोहल्ले में नदी किनारे पर है, यह मंदिर ६०० वर्ष पुराना बताते हैं।

५०.नवासण माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

५१.धरज माता, पोकरण- माताजी का मंदिर 'पोकरण' शहर के मध्य स्थित है। विवाह-जात, झुडुला के लिए गाँधी, नावंदर परिवार आते हैं, इसके अलावा धरजल माता का मंदिर घेवडा जिला 'जोधपुर' में भी है।

५२.डोरसिया माता,डारू- नागौर जिले के खींवसर से मैन रोड से जोरापुर गाँव से ६ किमी. दूर 'डारू' गाँव है। 'डारू' गाँव के २ किमी. दूर तालाब के किनारे मंदिर बना हुआ है। डोरसिया माता जी ट्रस्ट सेवा समिति गाँव डारू, नागौर नाम से बनी हुई है।

५३.सोढल माता- गोलकिया, पंसारी नख वाले मानते हैं। सोढत माताजी का मंदिर जैसलमेर दुर्ग में थोड़े आगे चलते ही अखैप्रोल के पास में ही स्थापित है, यह मंदिर ४०० वर्ष पुराना बताते हैं।

५४.बीस हत्थ माता, जोधपुर- इनका मंदिर 'भैरूनाथ' जोधपुर में जैन मंदिर के प्रांगण में है, वहाँ पर धर्मशाला भी है। 'जोधपुर' में माहेश्वरी भवन के अनेको होटल, धर्मशालाएं हैं जहाँ पर ठहरने की अच्छी व्यवस्था है।

५५.द्विजेश्वरी माता- यह मंदिर हनुमानगढ जिले के नोहर तहसील के भूकरका गाँव में है। कुल माता का नाम द्विजेश्वरी माता है। माताजी के मंदिर में पचीसिया नख वालों की विवाह की जात तथा मुण्डन संस्कार होते हैं।

५६.भादरिया माता- भादरिया (जैसलमेर) में भव्य मंदिर है, यहाँ ठहरने के लिए माहेश्वरी भवन की धर्मशालाएं व होटल भी हैं।

५७.सामल माता- जानकारी उपलब्ध नहीं

५८.ब्राम्हणी माता- माँ दुर्गा के दूसरे स्वरूप का नाम ब्रम्हचारिणी है, यहां शब्द का अर्थ तपस्या है। कठोर तपस्या को चारिणी होने के कारण ही प्रसिद्धि 'ब्रम्हचारिणी' नाम से हुई।

५९.जसाय मात- जानकारी उपलब्ध नहीं।

कर्म की भूमि पर किस्मत का फूल खिलता है।
नसीब अगर बुलंदी पर हो तो ही माहेश्वरी में जन्म मिलता है।
महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

Deepak Mantri
Mob.: 9916939322

Abhilasha No.7/29, Main Adarshnagar, 9th Cross, Chamarajpet,
Near Nayar Petrol Bunk, Bangalore, Bharat-560018

कर्म की भूमि पर किस्मत का फूल खिलता है।
नसीब अगर बुलंदी पर हो तो ही माहेश्वरी में जन्म मिलता है।
महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

सर्वे भवन्तु सुखिनः

Nathulal Porwal
Mob.: 9426338878

SHRINATH® ELECTRIC

Manufacturer of All Type Of Electrical PCC, MCC, APFC, Automation Panels

66/5, Umiya Estate, Opp. Ramdevpir Temple, Rajendrapark To Nagarwel Hanuman Road, Rakhiyal, Ahmedabad, Bharat-380023 | web: shrinathelectric.com | email: shrinathelectric1995@gmail.com

कर्म की भूमि पर किस्मत का फूल खिलता है।
नसीब अगर बुलंदी पर हो तो ही माहेश्वरी में जन्म मिलता है।
महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

Ramprasad Mundada
Mob.: 9422874344

Vyankatraman Dresses And Cloth Center

Main Road, Taluka Hadgaon, District Nanded, Maharashtra, Bharat-431712

with best compliment from

Satish Sharma
Mob.: 9374990850

KEPL
Kanhaiya Express Pvt. Ltd.

Kanhaiya Express Pvt. Ltd.

(Fleet owner & Transporter)

Competitve rates, safety, and reliable on-time

45/B Adhya Sradhys Ghat Road, 4th Floor Paul Mension
Opp-Indian Overses Bank, Kolkata, Bharat-700007
Mob.: 9883597108, 8232017153, 8232093706
email: sushil200513@gmail.com | kc.kolkata2005@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

शिव जी का संक्षिप्त परिचय

● **आदिनाथ शिव जी :** सर्वप्रथम शिव जी ने ही धरती पर जीवन के प्रचार-प्रसार का प्रयास किया, इसलिए उन्हें 'आदिदेव' भी कहा जाता है। 'आदि' का अर्थ प्रारंभ, आदिनाथ होने के कारण शिव जी एक नाम 'आदिश' भी है।

● **शिव जी के अस्त्र-शस्त्र :** शिव जी का धनुष पिनाक, चक्र भवरेंदु और सुदर्शन, अस्त्र पाशुपतास्त्र और शस्त्र त्रिशूल है, उक्त सभी का उन्होंने ही निर्माण किया था।

● **शिव जी का नाग :** शिव जी के गले में जो नाग लिपटा रहता है उसका नाम वासुकि है, वासुकि के बड़े भाई का नाम शेषनाग है।

● **शिव जी की अर्द्धांगिनी :** शिव जी की पहली पत्नी सती ने ही अगले जन्म में पार्वती के रूप में जन्म लिया और वही उमा, उर्मि, काली कही गई हैं।

● **शिव जी के पुत्र :** शिव जी के प्रमुख ६ पुत्र हैं- गणेश, कार्तिकेय, सुकेश, जलंधर, अयप्पा और भूमा, सभी के जन्म की कथा रोचक है।

● **शिव जी के शिष्य :** शिव जी के ७ शिष्य हैं, जिन्हें प्रारंभिक सप्तऋषि माना गया है, इन ऋषियों ने ही शिव जी के ज्ञान को संपूर्ण धरती पर प्रचारित किया, जिसके चलते भिन्न-भिन्न धर्म और संस्कृतियों की उत्पत्ति हुई। शिव जी ने ही गुरु और शिष्य परंपरा की शुरुआत की थी। शिव जी के शिष्य हैं- बृहस्पति, विशालाक्ष, शुक्र, सहस्त्राक्ष, महेन्द्र, प्राचेतस मनु, भारद्वाज, इसके अलावा ८वें गौरशिरस मुनि भी थे।

● **शिव जी के गण :** शिव जी के गणों में भैरव, वीरभद्र, मणिभद्र, चंदिस, नंदी, श्रृंगी, भृगिरिटी, शैल, गोकर्ण, घंटाकर्ण, जय और विजय प्रमुख हैं, इसके अलावा, पिशाच, दैत्य और नाग-नागिन, पशुओं को भी शिव जी का गण माना जाता है।

● **शिव जी की पंचायत :** भगवान सूर्य, गणपति, देवी, रुद्र और विष्णु ये शिव पंचायत कहलाते हैं।

● **शिव जी के द्वारपाल :** नंदी, स्कंद, रिटी, वृषभ, भृंगी, गणेश।

● **शिव पार्षद :** जिस तरह जय और विजय विष्णु के पार्षद हैं, उसी तरह बाण, रावण, चंड, नंदी, भृंगी आदि शिव के पार्षद हैं।

● **देवता और असुर दोनों के प्रिय शिव :** भगवान शिव जी को देवों के साथ असुर, दानव, राक्षस, पिशाच, गंधर्व, यक्ष आदि सभी पूजते हैं, वे रावण को भी वरदान देते हैं और राम को भी। उन्होंने भस्मासुर, शुक्राचार्य आदि कई असुरों को वरदान दिया था, शिव जी सभी आदिवासी, वनवासी जाति, वर्ण, धर्म और समाज के सर्वोच्च देवता हैं।

● **शिव चिह्न :** वनवासी से लेकर सभी साधारण व्यक्ति जिस चिह्न की पूजा कर सकें, उस पत्थर के ढेले, बटिया को शिव का चिह्न माना जाता है, इसके अलावा रुद्राक्ष और त्रिशूल को भी शिव जी का चिह्न माना गया है, कुछ लोग डमरू और अर्द्ध चन्द्र को भी शिव जी का चिह्न मानते हैं, हालांकि ज्यादातर लोग शिवलिंग अर्थात शिव जी की ज्योति का पूजन करते हैं।

● **शिव जी की गुफा :** शिव जी ने भस्मासुर से बचने के लिए एक पहाड़ी में अपने त्रिशूल से एक गुफा बनाई और वे उसी गुफा में रहने लगे। वह गुफा जम्मू से १५० किलोमीटर दूर त्रिकूटा की पहाड़ियों पर है, दूसरी ओर भगवान शिव जी ने जहां पार्वती को अमृत ज्ञान दिया था वह गुफा 'अमरनाथ गुफा' के नाम से प्रसिद्ध है।

● **शिव जी के पैरों के निशान :** श्रीपद- श्रीलंका में रतन द्वीप पहाड़ की चोटी पर स्थित श्रीपद नामक मंदिर में शिव जी के पैरों के निशान हैं, ये पदचिह्न ५ फुट ७ इंच लंबे और २ फुट ६ इंच चौड़े हैं, इस स्थान को सिवानोलीपदम कहते हैं, कुछ लोग इसे आदम पीक कहते हैं।

रुद्र पद- तमिलनाडु के नागपट्टीनम जिले के 'थिरुवेंगडू' क्षेत्र में श्रीस्वेदारण्येश्वर के मंदिर में शिव जी के पदचिह्न हैं जिसे 'रुद्र पदम' कहा जाता है, इसके अलावा 'थिरुवन्नामलाई' में भी एक स्थान पर शिव के पदचिह्न हैं।

तेजपुर- असम के तेजपुर में ब्रह्मपुत्र नदी के पास स्थित 'रुद्रपद मंदिर' में शिव जी के दाएं पैर का निशान है।

जागेश्वर- उत्तराखंड के अल्मोड़ा से ३६ किलोमीटर दूर जागेश्वर मंदिर की पहाड़ी से लगभग साढ़े ४ किलोमीटर दूर जंगल में भीम के मंदिर के पास जी शिव के पदचिह्न हैं। पांडवों को दर्शन देने से बचने के लिए उन्होंने अपना एक पैर यहां और दूसरा कैलाश में रखा था।

रांची- झारखंड के रांची रेलवे स्टेशन से ७ किलोमीटर की दूरी पर 'रांची हिल' पर शिवजी के पैरों के निशान हैं, इस स्थान को 'पहाड़ी बाबा मंदिर' कहा जाता है।

● **शिव जी के अवतार :** वीरभद्र, पिप्पलाद, नंदी, भैरव, महेश, अश्वत्थामा, शरभावतार, गृहपति, दुर्वासा, हनुमान, वृषभ, यतिनाथ, कृष्णदर्शन, अवधूत, भिक्षुवर्य, सुरेश्वर, किरात, सुनटनर्तक, ब्रह्मचारी, यक्ष, वैश्यानाथ, द्विजेश्वर, हंसरूप, द्विज, नतेश्वर आदि हुए हैं। वेदों में रुद्रों का जिक्र है। रुद्र ११ बताए जाते हैं- कपाली, पिंगल, भीम, विरुपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, आपिर्बुध्य, शंभू, चण्ड तथा भव।

● **शिव भक्त :** ब्रह्मा, विष्णु और सभी देवी-देवताओं सहित भगवान राम और कृष्ण भी शिव भक्त रहे हैं। हरिवंश पुराण के अनुसार कैलास पर्वत पर कृष्ण जी ने शिव जी को प्रसन्न करने के लिए तपस्या की थी। भगवान राम ने रामेश्वरम में शिवलिंग स्थापित कर उनकी पूजा-अर्चना की थी।

● **शिव ध्यान :** शिव जी की भक्ति हेतु शिव का ध्यान-पूजन किया जाता है। शिवलिंग को बिल्वपत्र चढ़ाकर शिवलिंग के समीप मंत्र जाप या ध्यान करने से मोक्ष का मार्ग पुष्ट होता है।

● **शिव मंत्र :** दो ही शिव जी के मंत्र हैं पहला- ॐ नमः शिवाय।
दूसरा महामृत्युंजय मंत्र- ॐ ह्रौं जू सः। ॐ भूः भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जू ह्रौं ॐ ।। है।

● **शिव व्रत और त्योहार :** सोमवार, प्रदोष और श्रावण मास में शिव व्रत रखे जाते हैं। शिवरात्रि और महाशिवरात्रि शिव जी का प्रमुख पर्व है।

महेश नवमी पर्व पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Premlata Maheshwari
Mob.:- 99888 14559
NGO Partner
Charity Medical Trust Ludhiana
Ludhiana Diagnostic Centre
LIFELINE HOSPITAL
Gill Road, Ludhiana, Punjab, Bharat - 141003

महादेव महेश्वर की कृपा का चमत्कार,
माहेश्वरी समाज को जाने सारा संसार
महेश नवमी के पावन पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

Gopikrishna Mundra

Mob: 9414400432

Po. Jaswantgarh, Dist. Kuchaman-Didwana
Rajasthan, Bharat -341304

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

महेश जिनका नाम है, कैलाश जिनका धाम है,
देवों के देव महादेव को, हम सबका प्रणाम है...
महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

राधेश्याम परवाल
B.Com., M.A., CAIIB
Mob: 9414061636, 9309448981

पूर्व वरिष्ठ प्रबन्धक	- बैंक ऑफ राजस्थान
पूर्व संयुक्त मंत्री	- अ.भा. माहेश्वरी महासभा
पूर्व महामंत्री	- राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा
पूर्व प्रदेश अध्यक्ष	- पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा
पूर्व जिला अध्यक्ष	- जयपुर जिला माहेश्वरी सभा
पूर्व संयुक्त मंत्री	- वरिष्ठ जन कल्याणकारी परिषद्
पूर्व महामंत्री	- बैंक ऑफ राजस्थान रिटायर्ड स्टॉफ सोसायटी
पूर्व महामंत्री	- अम्बर टॉवर डेवलपमेंट सोसायटी
उपाध्यक्ष	- वैशाली नगर, डी ब्लॉक विकास समिति
पूर्व प्रधान सम्पादक	- राजबैंक टाइम्स
पूर्व सम्पादक	- आईबोरा मूवमेन्ट
पूर्व सम्पादक	- राजस्थान माहेश्वरी सन्देश

'परवाल विला', डी-62, वैशाली नगर, जयपुर, राजस्थान, भारत- 302021
ई-मेल - radheyshyamparwal@gmail.com

एक दिन विश्व के मानचित्र Globe में
INDIA की जगह BHARAT जरूर लिखा जाएगा।
जय भारत!

MUMUSO

Mob: 9830655733

4/1 Middleton Street, 6th Floor, Kolkata,
West Bengal, Bharat - 700071

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

Sell Your Car Hassle-Free
at Carudyog Auction

✓ Unlock Your Car's True Value
✓ Connect Directly With Buyers
✓ Empower Your Preowned Car Journey

Visit Our Website:
www.carudyog.com
Mob: 7391087001
Download Our App Now
Google Play App Store

महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको हार्दिक शुभकामनाएँ

Sattu N. Rathi
Mob: 9157016733

VSK SYNTHETICS PVT. LTD.

ISO 9001: 2008 Certified

Quality Based Dyeing of Synthetic Fabrics

Plot No. 3, Block No. 199-A, B/h. Tantithaiya Bus Stand,
Kadodra Bardoli Road, Jolwa, Surat, Gujarat, Bharat- 394305

माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति दिवस
महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको
हार्दिक शुभकामनाएँ

Purushottam Daga
भ्रमणध्वनि - 09822201040

Siddharth Daga
भ्रमणध्वनि - 8446600957

MANIKJI METACHEM PVT. LTD

An ISO 9001-2015 Certified Company

- Manufacturer of COVER FLUXES, DEGASSER & GRAIN REFINER FOR Aluminimum Melters.
- Manufacturer & Exporter of Ferrous Foundry Fluxes for Steel Industries

Shreeram Nagar, Sirso, Murtizapur,
Dist- Akola, Maharashtra, Bharat - 444107
अणुडाक : pmdaga@manikjimetachem.co.in

महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको हार्दिक शुभकामनाएं

With Best Compliments from
Srinivasji Anilkumar Lakhotiya

OUR SERVICES

Event Management
Marriage Decorations
Supplying Material
Flower Decoration
German Hanger Installation
Social and Political Gather Arrangements
Exhibition Stall & Other Related Material

SWASTIK
Swastik Group
Swastik Decor & Events
Swastik Supplying Company

14-7-362, Begum Bazar, Hyderabad - 500 012
Ph: 040-24614196, Mob.+91 9393033270
Email: swastiksupplying@gmail.com

... And much More

अन्तर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन की हुई सफलतम बैठक

अन्तर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन महाराष्ट्र प्रदेश एवं मुम्बई प्रदेश की कोर कमेटी की बैठक का आयोजन दिनांक २५ मई २०२५ को मुंबई में किया गया। बैठक की अध्यक्षता अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक अग्रवाल जी ने की। बैठक में राष्ट्रीय वरिष्ठ कार्यकारी अध्यक्ष कान्तीलाल मेहता,कार्यकारी अध्यक्ष अशोक मूंदडा,प्रोमोटर मेम्बर शान्तीलाल कवाड,महाराष्ट्र के अध्यक्ष महेश चन्द्र गुप्ता, मुंबई अध्यक्ष दिलीप माहेश्वरी,विभाष खाटू सहित महिला इकाई से श्रीमती पिंकी केडिया,श्रीमती विजयता जायसवाल,श्रीमती शिखा महाजन एवं विभिन्न वैश्य घटकों के सम्मानित पदाधिकारी तथा महाराष्ट्र एवं मुंबई के प्रदेश पदाधिकारी उपस्थित रहे। बैठक के सफल आयोजन के लिए सभी पदाधिकारियों एवं पाटोदिया परिवार का हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया गया।

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाना चाहिए

भारत को 'BHARAT' ही बोलेंगे

जय भारत! जय-जय राजस्थान

Remove **INDIA** Name From The Constitution

रमनलाल कोठारी
सचिव माहेश्वरी सभा रिसोड़ वाशिम
बीकानेर निवासी-रिसोड प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२३४३०५६९

रमनलाल जी 'महेश नवमी' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'महेश नवमी' पर्व माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति का पर्व है, जिसे संपूर्ण विश्व में फैले माहेश्वरी परिवार बड़े ही उत्साह के साथ मनाते हैं, इस अवसर पर विभिन्न धार्मिक सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। हमारे 'रिसोड' में लगभग १५० माहेश्वरी परिवार बसे हुए हैं और यहां माहेश्वरी समाज का भवन भी बना हुआ है, समाज द्वारा 'महेश नवमी' पर्व पर विभिन्न कार्यक्रम किए जाते हैं।

यदि आज के परिपेक्ष की बात की जाए तो माहेश्वरी समाज अल्पसंख्यक है, माहेश्वरी एक व्यवसायिक समाज है, जो अधिकतर अपने व्यवसायों में ही व्यस्त रहते हैं। 'महेश नवमी' पर्व हमें अवसर प्रदान करता है, अपने समाज से जुड़े रहने के लिए, कमजोर वर्ग भी जो अपने आपको अलग-थलग पाते हैं, इस माध्यम से मुख्य धारा से जुड़ने का अनुभव प्राप्त करते हैं, इसीलिए आज के परिपेक्ष में यह पर्व मनाना बहुत जरूरी है। अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा द्वारा 'अपना घर-अपना छत' की नई योजना बनाई गई है, जिससे ऐसे वर्गों को भी सहायता प्रदान की जा सके, इसके माध्यम से आज माहेश्वरी समाज बहुत ही जागरुक है। धार्मिक रूप से भी और सामाजिक रूप से भी!

आज की युवा पीढ़ी पहले की अपेक्षा अधिक अपने धर्म और समाज से जुड़ी हुई है। महासभा द्वारा विभिन्न क्रियाकलाप आयोजित किया जा रहे हैं, जिसमें युवाओं की भागीदारी सबसे अधिक रहती है। युवाओं को उचित मार्गदर्शन दिया जाए तो युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से पूरी तरह से जुड़ा रहेगा।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' नाम में अपनापन है, जो इंडिया में नहीं, हमारी वास्तविक पहचान 'भारत' नाम से ही है।

रमनलाल जी मूलतः राजस्थान स्थित 'बीकानेर' के निवासी हैं। आपका जन्म सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले ४० सालों से आप महाराष्ट्र के वाशिम जिले में स्थित 'रिसोड' में बसे हुए हैं, यहां आप सुपर मार्केट फर्नीचर व अन्य कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में विशेष रूप से सक्रिय रहते है। 'रिसोड' में स्थापित माहेश्वरी भवन के निर्माण में आपकी विशेष भूमिका रही है। आप वर्तमान में स्थानीय संस्था के सचिव पद पर कार्यरत हैं। ६ वर्षों से अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के कार्यकारिणी सदस्य हैं। वाशिम जिला माहेश्वरी सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रहे हैं, सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

श्रीवल्लभ भूतड़ा
व्यवसायी व समाजसेवी
किशनगढ़ निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३३१०५५५७९

श्रीवल्लभ जी 'महेश नवमी' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि माहेश्वरी परिवारों का एक महत्वपूर्ण पर्व है 'महेश नवमी', जो प्रतिवर्ष ज्येष्ठ महीने की शुक्ल पक्ष के नवमी को मनाया जाता है, इसी दिन भगवान शिव और मां पार्वती की कृपा से हम माहेश्वरियों की उत्पत्ति मानी जाती है, इसलिए संपूर्ण समाज उन्हें अपने आराध्य के रूप में पूजा करता है। मान्यता है कि इसी दिन भगवान शिव और पार्वती ने ७२ क्षत्रियों को ऋषियों के श्राप से मुक्ति दिलाई थी इसलिए उनका 'माहेश्वरी' नाम पड़ा और भविष्यवाणी हुई कि सनातन मान्यता के अनुसार यदि कोई व्यक्ति 'महेश नवमी' के दिन पूरे विधि विधान से भगवान शिव की पूजा करता है या फिर किसी शिव धाम में जाकर दर्शन करता है तो उसके जीवन से जुड़े दुख दूर होकर सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं। 'महेश नवमी' के दिन भगवान शिव के रुद्राभिषेक का बहुत ज्यादा महत्व माना गया है, इसीलिए इस दिन को संपूर्ण माहेश्वरी परिवारों द्वारा पर्व के रूप में बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है।

आज की युवा पीढ़ी यही संदेश देना चाहूंगा कि वह 'महेश नवमी' पर्व के महत्व को जाने, समझे और उत्सव में सम्मिलित होकर इस पर्व के महत्व को जन-जन तक पहुंचाएं, जिससे आने वाले समय में भी इस पर्व का महत्व और अधिक बढ़ जाए।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'!

श्रीवल्लभजी मूलतः राजस्थान स्थित 'किशनगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान में, तत्पश्चात उच्च शिक्षा आपने 'कोलकाता' से ग्रहण की है। पेशे से इनकम टैक्स कंसल्टेशन के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी रुचि रखते हैं, दक्षिण कोलकाता माहेश्वरी सभा, अजमेर संगठन व भूतड़ा भाजपा संस्था से जुड़े हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

नरेंद्र कुमार लखोटिया
सचिव श्री माहेश्वरी सभा रांची
इस्लामपुर निवासी-रांची प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९१४२९२२७५०

नरेंद्र जी 'महेश नवमी' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'महेश नवमी' माहेश्वरी समाज की वंशोतपत्ति का दिवस है, जिसे माहेश्वरी परिवार उत्सव के रूप में मनाता है। आज के परिपेक्ष में इसकी सार्थकता और बढ़ जाती है जहां व्यक्ति अपने में ही व्यस्त है, वहां पर्व हमें मौका देते हैं अपने समाज और संगठन से जुड़ने के लिए और आने वाली पीढ़ी को इस दिन के महत्व की जानकारी होती रहे, इसीलिए इस पर्व की सार्थकता आज के समय में अधिक है।

रांची में माहेश्वरी समाज के लगभग ३५० परिवार निवास करते हैं, यहां महेश नवमी पर्व एक हफ्ते तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से मनाया जाता है, ब्लड डोनेशन कैंप, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रतियोगिताएं आदि होती हैं।

आज की युवा पीढ़ी को अपने धर्म और समाज से जोड़ना जरूरी है, वर्तमान स्थिति में देखा जा रहा है कि युवा पीढ़ी धर्म के प्रति अधिक जागरूक हो रही है, वे विभिन्न धार्मिक सामाजिक कार्यक्रमों में सहभागी होने लगे हैं।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि यह सराहनीय अभियान है, अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहे।

नरेंद्र जी मूलतः राजस्थान के झुंझुनूं जिले में स्थित 'इस्लामपुर' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'बिहार' में संपन्न हुई है। १९८० से आप 'रांची' में बसे हैं और ट्रांसपोर्ट के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। श्री माहेश्वरी सभा रांची के सचिव हैं। ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन, मारवाड़ी सहायक समिति, चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स जैसी कई संस्थानों में भी सक्रिय हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

अरुण धूत
अध्यक्ष माहेश्वरी मंडल जमशेदपुर
सीकर निवासी-जमशेदपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३१३०२००३

अरुण जी 'महेश नवमी' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि बचपन से ही हम 'महेश नवमी' पर्व मनाते आ रहे हैं, यह हम माहेश्वरी परिवारों की उत्पत्ति का दिन है, इसलिए संपूर्ण विश्व में फैले 'माहेश्वरी' इस दिन को पर्व के रूप में मनाते हैं, हम भगवान महेश की संतान हैं, इसलिए 'माहेश्वरी' कहलाते हैं। 'सेवा-त्याग-सदाचारी' यह माहेश्वरी समाज के ध्येय हैं, इसी के अनुरूप संपूर्ण माहेश्वरी अपने क्रियाकलापों को करता है, माहेश्वरी समाज की विभिन्न धार्मिक सामाजिक संस्थाएं आज पूरे भारत में कार्यरत हैं।

'जमशेदपुर' में माहेश्वरी समाज द्वारा महेश्वरी भवन बना हुआ है, जिसमें पिछले ३० सालों से होम्योपैथिक दवाखाना निःशुल्क संचालित है, यहां लगभग १७० परिवार निवास करते हैं। यहां माहेश्वरी समाज द्वारा 'महेश नवमी' के अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाता है, झंडोत्सव मनाया जाता है, जल व शरबत का वितरण किया जाता है, यहां महिला मंडल और युवा संगठन भी है, जो अपने अपने स्तर पर कार्यरत हैं। जमशेदपुर का माहेश्वरी समाज सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़कर सहभागी होता है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से जुड़ी भी है और विमुख भी है, जो किशोर अवस्था तक युवा पीढ़ी अपने परिवार के साथ रहती है, तो उनका अपने समाज में आना-जाना लगा रहता है, उच्च शिक्षा के लिए जो अपने परिवार से दूर हो जाते हैं, उनका समाज से भी दूराव होने लगता है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए। 'मैं भारत हूँ फाउंडेयशन' का यह अभियान स्वागत योग्य है, इसका अधिक से अधिक प्रचार प्रसार होना चाहिए।

अरुण जी मूलतः राजस्थान के सीकर जिले में स्थित 'खाचरियावास' के निवासी हैं। आपका परिवार लगभग ९० सालों से 'जमशेदपुर' में बसा हुआ है, यहां कपड़ों के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते है। माहेश्वरी मंडल जमशेदपुर के अध्यक्ष हैं, कुंजीलाल शाह ट्रस्ट (धर्मशाला) के ट्रस्टी हैं, श्री टाटानगर गौशाला, श्री राजस्थान शिव मंदिर व श्री राजस्थान सेवा सदन (अस्पताल) के कार्य समिति सदस्य हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

समस्त राजस्थानी समाज की एकमात्र पत्रिका
'मेरा राजस्थान' के सभी पाठकों को विश्वनाथ भरतिया परिवार की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं!

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए अब और इंडिया नहीं

नाथुलाल पोरवाल
व्यवसायी व समाजसेवी
चित्तौड़गढ़ निवासी-अहमदाबाद प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२६३३८८७८

नाथुलाल जी 'महेश नवमी' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि आज से लगभग ५१५८ वर्ष पूर्व भगवान शंकर और माता पार्वती की कृपा से 'माहेश्वरी' समाज की उत्पत्ति हुई थी, पहले हमारे पूर्वज क्षत्रिय थे, हमें पुनर्जीवन प्राप्त हुआ, भगवान शंकर ने आशीर्वाद दिया कि आप अस्त्र-शस्त्र छोड़ व्यावसायिक क्षेत्र में आगे बढ़ें, इसलिए हमारे पूर्वज क्षत्रिय से वैश्य बने। भगवान महेश की कृपा से ही आज विश्व में माहेश्वरी परिवार व्यापारिक व सामाजिक क्षेत्र में अग्रणीय है, माहेश्वरी समाज 'महेश नवमी' के दिन को बड़े पर्व के रूप में उत्साह के साथ मनाता है, इस दौरान दिन भर कई धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रम होते हैं, शोभा यात्रा निकाली जाती हैं, जिसमें झांकियां, पालकी, घोड़ा आदि सम्मिलित किया जाता है, जिसमें बड़े बुजुर्ग भी सम्मिलित होते हैं, आज के परिपेक्ष में इसकी सार्थकता और बढ़ जाती है। अहमदाबाद में ७००० से अधिक माहेश्वरी परिवार बसे हुए हैं, हर क्षेत्र में माहेश्वरी समाज इस पर्व को बड़े ही धूमधाम से मनाते हैं। अहमदाबाद में माहेश्वरी समाज के दो भवन बने हुए हैं और दो भवन निर्माणाधीन हैं।
आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से विमुख होती दिखाई दे रही है, इस पर समाज और परिवार को कार्य करने की आवश्यकता है, युवाओं को उचित मार्गदर्शन मिले तो वे अवश्य अपने धर्म समाज से जुड़ेंगे।
'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, प्राचीन काल से हमारे देश की पहचान 'भारत' नाम से ही रही है, पहले यह अखंड 'भारत' था।
नाथुलाल जी मूलतः राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित 'गंगरार गांव' के निवासी है, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा राजस्थान में संपन्न हुई है, पिछले ४८ सालों से आप 'अहमदाबाद' में बसे हैं और इलेक्ट्रीक कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के कार्यकारी मंडल सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!
- मेरा राजस्थान

प्रेमलता माहेश्वरी
लेखिका व समाजसेवी
मालवा निवासी-लुधियाना प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९८८८१४५५९

प्रेमलता जी 'महेश नवमी' पर्व की शुभकामना देते हुए कहती हैं कि माहेश्वरी समाज के लिए 'महेश नवमी' पर्व का बहुत अधिक महत्व है, क्योंकि 'माहेश्वरियों' की उत्पत्ति स्वयं भगवान महेश ने की है, इसीलिए हम 'माहेश्वरी' कहलाए। आज के परिपेक्ष में माहेश्वरी समाज में जितनी उन्नति की है, सब भगवान महेश की कृपा से ही संभव हुआ है, न सिर्फ आर्थिक रूप से बल्कि सामाजिक और धार्मिक रूप से भी महेश्वरी समाज हमेशा अग्रणी रहा है। पहले के मुकाबले 'महेश नवमी' आज हर क्षेत्र में भव्य रूप से मनाई जाती है। माहेश्वरी समाज, माहेश्वरी महिला मंडल, माहेश्वरी युवा मंडल हर आयु वर्ग के लोग हर क्षेत्र में सक्रिय है। आज माहेश्वरी समाज का युवा वर्ग पहले की अपेक्षा धार्मिक और सामाजिक कार्यों में अपना ज्यादा योगदान देता है ।
'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम एक पहचान रहनी चाहिए 'भारत'!
प्रेमलता जी मूलतः 'आगर मालवा' की निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'उज्जैन' में संपन्न हुई है, वर्तमान में आप 'लुधियाना' में अपने अस्पताल का मैनेजमेंट देखती है तथा 'लुधियाना डायग्नोस्टिक सेंटर' के नाम से अपनी लैबोरेट्री चलाती हैं। 'लुधियाना' के विभिन्न धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय हैं। आप लेखन कार्य में भी रुचि रखती हैं। आपकी पुस्तक को बसंती देवी चांडक चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रथम पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। लुधियाना माहेश्वरी महिला मंडल में उपाध्यक्ष है तथा अन्य कई संस्थानों से भी जुड़ी हुई हैं। जय भारत!
- मेरा राजस्थान

दीपक मंत्री
अध्यक्ष माहेश्वरी युवा संघ बेंगलुरु
उदयपुर निवासी-बेंगलुरु प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९१६९३९३२२

दीपक जी 'महेश नवमी' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'महेश नवमी' माहेश्वरी समाज का प्रमुख पर्व है, जिसे बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है, क्योंकि इसी दिन माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति भगवान महेश और माता पार्वती की कृपा से हुई थी, इसीलिए हम माहेश्वरी कहलाए। पूरे विश्व में फैले माहेश्वरी परिवार इस दिन भगवान महेश और माता पार्वती की पूजा अर्चना व रुद्राभिषेक करते हैं, धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है, शोभायात्रा निकाली जाती है, इस अवसर पर संपूर्ण समाज इकट्ठा होता है, जिससे इस पर्व का धार्मिक और सामाजिक दोनों ही महत्व बना रहता है। बेंगलुरु में समाज द्वारा किशोर और युवाओं को जोड़ने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं, चैरिटी, ब्लड डोनेशन कैंप, सांस्कृतिक कार्यक्रम अन्य गतिविधियां भी होती हैं। बेंगलुरु में लगभग १३५०-१४०० माहेश्वरी सभा के सदस्य और ५०० युवा संघ के सदस्य हैं। 'महेश नवमी पर्व' माहेश्वरी सभा, माहेश्वरी युवा संघ और माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा संयुक्त द्वारा आयोजित किया जाता है, यहां माहेश्वरी समाज द्वारा माहेश्वरी भवन, माहेश्वरी गर्ल्स और बॉयज हॉस्टल भी बना हुआ है। माहेश्वरी सौहार्द क्रेडिट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट और फाउंडेशन, माहेश्वरी सभा, माहेश्वरी युवा संघ और माहेश्वरी महिला संगठन ये सभी माहेश्वरी समाज बैंगलोर की प्रमुख संस्थाएं हैं।
आज की युवा पीढ़ी, अपने धर्म और समाज के प्रति निष्ठावान रहे, पर यह कम ही देखने को मिलता है। युवाओं को जोड़ने के लिए हमारे यहां **शेष पृष्ठ ४२ पर...**

पृष्ठ ४१ से... सरस्वती पुरस्कार प्रदान किया जाता है, जिन युवाओं ने अपने क्षेत्र में नया अचीवमेंट प्राप्त किया है, उन्हें सम्मानित भी किया जाता है, यहां युवा संगठन से लगभग ५०० युवा जुड़े हैं।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए', एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' हमारे देश का वास्तविक नाम है, हमारी पहचान 'भारत' से ही रहनी चाहिए।

दीपक जी मूलतः राजस्थान स्थित 'उदयपुर' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'बेंगलुरु' में संपन्न हुई है, यहां आप बैंक में बैंकिंग फाइनेंस और आईटी से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, माहेश्वरी युवा संघ बेंगलुरु के अध्यक्ष हैं, अन्य संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

रामप्रसाद मुंदड़ा
संरक्षक नांदेड जिला माहेश्वरी सभा
हरसौल निवासी-हदगांव प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२२८७४३४४

रामप्रसाद जी 'महेश नवमी' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि भगवान महेश हमारे आराध्य हैं, हम माहेश्वरियों की उत्पत्ति भगवान महेश व माँ पार्वती की कृपा दृष्टि से ही हुई है और इस उत्पत्ति दिवस को माहेश्वरी समाज 'महेश नवमी' के रूप में मनाता है। हमारे क्षेत्र 'हदगांव' में ७५ माहेश्वरी परिवार निवासित हैं। यहां समाज द्वारा 'महेश भवन' का भी निर्माण किया जा रहा है। यहां माहेश्वरी परिवारों द्वारा 'महेश नवमी' पर्व बड़े ही धूमधाम और उत्साह से मनाया जाता है, महिलाओं और बच्चों की भी भागीदारी बढ़-चढ़कर रहती है। विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिसमें सभी सम्मिलित होते हैं, आज के परिपेक्ष में इस पर्व का महत्व अधिक बढ़ जाता है, यह पर्व में अवसर प्रदान करता है संगठन से जुड़ने का, एक दूसरे से मिलने का।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से जुड़ी हुई है, उनका भी धार्मिक और सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर योगदान रहता है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम, एक पहचान रहनी चाहिए 'भारत'!

रामप्रसाद जी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित 'हरसौल' के निवासी हैं, आपका परिवार कई पीढ़ियों से महाराष्ट्र के नांदेड़ जिले में स्थित 'हातगांव' तालुका का निवासी है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। यहां आप कृषि और कपड़ा व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के कार्यकारी मंडल सदस्य हैं। हदगांव तालुका के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष रहे हैं। नांदेड जिला माहेश्वरी सभा के उपाध्यक्ष रहे हैं। १५ सालों से महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा के कार्यकारी सदस्य रहे हैं। साई नागरी बैंक हदगांव के संचालक, महेश सेवा सांस्कृतिक भवन, पंढरपुर के सदस्य व अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं। २०२१ में नांदेड जिला माहेश्वरी सभा द्वारा 'जीवन गौरव सम्मान' से आपको सम्मानित किया गया है। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

माणिकचंद माहेश्वरी
उपाध्यक्ष माहेश्वरी सभा भुवनेश्वर
बीकानेर निवासी-भुवनेश्वर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३७०१७२६२

माणिकचंद जी 'महेश नवमी' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'महेश नवमी' माहेश्वरी परिवारों की उत्पत्ति का दिन है, इसीलिए संपूर्ण माहेश्वरी समाज द्वारा यह पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है, हमारे यहां 'भुवनेश्वर' में माहेश्वरी समाज के ६०-७० परिवार हैं। 'महेश नवमी' पर्व पर सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी परिवार इकट्ठा होता है और यह परंपरा कई वर्षों से चली आ रही है। आज के परिपेक्ष में इस पर्व का महत्व अधिक बढ़ गया है, अपनी उत्पत्ति दिवस के महत्व को बनाए रखने के लिए परिवार और बच्चों को जागृत रखने के लिए इस पर्व को मनाना बहुत जरूरी है, इस पर्व के माध्यम से जब इकट्ठा होते हैं तो आपस में एक दूसरे से मिलना जुलना होता है, धार्मिक अनुष्ठान होते हैं, जिससे सकारात्मक ऊर्जा का एहसास होता है, इसीलिए यह पर्व मनाना हमारे लिए बहुत जरूरी है। माहेश्वरी सभा भुवनेश्वर द्वारा दही पानी का वितरण प्रतिवर्ष ग्रीष्म ऋतु में जगन्नाथ पुरी क्षेत्र में लगभग ४५ दिनों तक चलाया जाता है।

आज की युवा पीढ़ी को धर्म और समाज से जुड़ना बहुत जरूरी है। 'भुवनेश्वर' में युवा सभा द्वारा कई धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रम किए जाते हैं, युवाओं का अपने धर्म समाज के प्रति झुकाव बढ़ रहा है। 'भुवनेश्वर' में युवा सभा द्वारा ग्रीष्म काल में एक दिन का शरबत वितरण का आयोजन किया जाता है, ताकि युवाओं में जोश रहे।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए। 'भारत' हमारे देश का प्राचीन और ऐतिहासिक नाम है, इसलिए हमारे देश का एक ही नाम और एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'!

माणिकचंद जी मूलतः राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'दूलचासर' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षों से आप 'भुवनेश्वर' में बसे हैं और कपड़ा व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। भुवनेश्वर माहेश्वरी सभा के उपाध्यक्ष हैं, अंतरराष्ट्रीय माहेश्वरी महासभा के अध्यक्ष द्वारा निर्वाचित सदस्य हैं। माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर से जुड़े हैं, मारवाड़ी समिति भुवनेश्वर के कार्यकारिणी सदस्य हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

मनोज माहेश्वरी
अध्यक्ष लायंस क्लब कलूंगा
नापासर निवासी-उड़ीसा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ७७३५७७७९७७

मनोज जी 'महेश नवमी' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति का एक विशेष दिन है 'महेश नवमी', जो हमें याद दिलाता है कि हम भगवान महेश की संतान हैं, उनकी कृपा से माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति हुई है। राजस्थान के लोहार्गल में माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति हुई थी, भगवान शिव पूरे ब्रह्मांड के देवता कहे जाते हैं, उनके द्वारा त्याग और तपस्या के संदेश पर चलने के लिए 'महेश नवमी' पर्व मनाया जाता है। आज के परिपेक्ष में इस पर्व को मनाने का यही उद्देश्य है कि आने वाली पीढ़ी भी अपने समाज उत्पत्ति के महत्व से अवगत हो। 'राउरकेला' में माहेश्वरी समाज द्वारा महेश नवमी बड़े ही उत्साह से मनाया जाता है, भगवान शिव के मंदिर में रुद्राभिषेक किया जाता है, शोभायात्रा माहेश्वरी भवन तक लाई जाती है, तत्पश्चात शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम और स्नेह भोज का आयोजन रहता है। यहां समाज का माहेश्वरी भवन बना हुआ है, जो पूरी तरह से वातानूकुलित है, जिसमें ठहरने की सारी सुविधाएं हैं।

युवा पीढ़ी आज के समय पाश्चात्य सभ्यता की ओर अधिक अग्रसर हो रही है। आधुनिक यंत्रों में अधिक व्यस्त रहने लगी है, जिसके कारण वह धर्म और समाज से दूर हो रही है, इसीलिए युवाओं को उचित मार्गदर्शन और महेश नवमी जैसे विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से जोड़ा जा सकता है। धार्मिक रीति-रिवाज से जुड़े उनकी जिज्ञासा व प्रश्नों के उत्तर के लिए वैज्ञानिक तरीके से उन्हें समझाना होगा।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

मनोज जी मूलतः राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'नापासर' के निवासी हैं, आपका जन्म नापासर में व संपूर्ण शिक्षा उड़ीसा के 'राउरकेला' में संपन्न हुई है, यहां आप लोहे के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक व राजनितिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं, सुंदरगढ़ जिला माहेश्वरी सभा के कार्यकारी सदस्य हैं, लायंस क्लब कलूंगा के अध्यक्ष हैं, जिसके द्वारा यहां मुक्तिधाम का निर्माण किया गया है। भारतीय जनता पार्टी राउरकेला के कोषाध्यक्ष के रूप में भी सक्रिय हैं। अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

गोविंद ईनाणी
व्यवसायी व समाजसेवी
जोधपुर निवासी-बस्तर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४०७६७७०००

गोविंद जी 'महेश नवमी' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि माहेश्वरी समाज की वंशोतपत्ति का दिवस है 'महेश नवमी'। हमें गर्व है कि हम भगवान शिव और माता पार्वती की संतान कहलाते हैं, उनकी विशेष कृपा से ही माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति हुई थी। इसी दिन 'लोहार्गल' राजस्थान हमें माहेश्वरी होने का गौरव प्राप्त हुआ था। आज के परिपेक्ष में इसकी सार्थकता और बढ़ जाती है क्योंकि आने वाली युवा पीढ़ी को यह पता चले कि हम माहेश्वरी क्यों हैं, इसका अर्थ क्या है, हमारे समाज का क्या महत्व है? साथ ही हमारी जो समाज की घटती हुई जनसंख्या है, उस पर भी हमें ध्यान देने की आवश्यकता है, हम अपनी संस्कृति से दूर भी हो रहे है, बच्चों में अपने धर्म के प्रति जागृति आए, आज छोटे-छोटे शहरों में बसे माहेश्वरी समाज द्वारा महेश नवमी पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है, वहीं इसके विपरीत बड़े और सुविधा संपन्न शहरों में यह त्यौहार कम मनाया जाने लगा है। बस्तर में माहेश्वरी समाज के १७५ परिवार निवास करते हैं, माहेश्वरी भवन भी बना हुआ है, हमारे यहां विगत बीस दिनों से 'महेश नवमी' पर्व की तैयारी प्रारंभ है, हमें गर्व है कि हम भगवान महेश के वंशज हैं। यहां अन्य कई सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। हमें यह पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाना चाहिए, अतः समाज को यह आवश्यक करना चाहिए कि 'महेश नवमी' के दिन अपने व्यापारिक व अन्य प्रतिष्ठानों से छुट्टी लेकर इस पर्व को उसी दिन बड़े ही उत्साह से और भव्य रूप में मनाए।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज के प्रति पहले की अपेक्षा अधिक जागृत हो रही है हमें निरंतर प्रयास करना चाहिए, युवा वर्ग को जोड़ने के लिए हमेशा उनका उत्साहवर्धन और प्रेरित करना चाहिए।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम एक पहचान रहनी चाहिए 'भारत!

गोविंद जी मूलतः राजस्थान के जोधपुर जिले के स्थित ओसिया तहसील में स्थित 'जाखण' गांव के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में स्थित 'जगदलपुर' में हुई है, यहां आप कारोबार से जुड़े हुए हैं, साथ ही आप सामाजिक और राजनीतिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के कार्यकारिणी सदस्य हैं। स्थानीय सभा में भी कार्यकारिणी के सदस्य हैं, भाजपा व्यवसायिक प्रकोष्ठ में प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य हैं। आरएसएस से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

सुरेश सोमानी
अध्यक्ष चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स मलकानगिरी
जोधपुर निवासी-उड़ीसा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३७०९४४०९

सुरेश जी 'महेश नवमी' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'महेश नवमी' माहेश्वरी जाति की उत्पत्ति का दिन है। भगवान महेश की कृपा से 'माहेश्वरियों' की उत्पत्ति हुई थी, इसलिए हम 'माहेश्वरी' कहलाए, इस दिन को माहेश्वरी समाज द्वारा बड़े ही उत्सव के रूप में मनाया जाता है, शोभा यात्रा निकाली जाती है। 'मलकानगिरी' में माहेश्वरी समाज के ५० परिवार हैं, यहां माहेश्वरी भवन बना हुआ है, जो उड़ीसा का पहला महेश्वरी भवन है। यहां का माहेश्वरी समाज धार्मिक और सामाजिक कार्यों में बहुत ही सक्रिय है। 'महेश नवमी' के अवसर पर प्रभात फेरी निकलती है, ब्लड डोनेशन कैंप होता है, बच्चों की प्रतियोगिताएं होती हैं और शाम को सामूहिक भोज का आयोजन होता है।

समाज द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में युवाओं को जोड़ा जाए तो युवाओं में अपने धर्म और समाज के प्रति रुझान बढ़ेगा।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' हमारे देश का प्राचीन नाम है, अतः हमारे देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए, चाहे भाषा कोई भी हो।

सुरेश जी मूलतः राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित 'गंगानी गांव' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा उड़ीसा के 'मलकानगिरी' में संपन्न हुई है, यहां व्यापार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, उड़ीसा राज्य माहेश्वरी सभा के कार्यकारी सदस्य हैं। मलकानगिरी माहेश्वरी सभा के सदस्य हैं। चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स मलकानगिरी के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

बरसात में गरमा गरम खायें व खिलायें

आलू केले के कोफते

सामग्रीः आलू 250 ग्रा., नमक, महीन कटी अदरक, कच्चा केला 250 ग्रा., लालमिर्च, महीन कटी हरी मिर्च, कसा नारियल 50 ग्रा., तलने का घी महीन, कटा हरा धनिया

विधि : आलू और केले उबाल लें। ठंडे होने पर छील कर किस लें, सब मसाले मिला कर 15 गोलियाँ बना लें, गरम घी में सुनहरे तल लें।

स्वाद हेतु स्वयं खायें, कुछ कमी लगे तो ठीक करें, फिर परिवार को खिलाएं व परिवार से वाहि-वाहि लूटें।

आलू की कचौरी

सामग्रीः उबले आलू 250 ग्रा., नमक, हरीमिर्च, कुट्टू का आटा 125 ग्रा., लालमिर्च, हरा धनिया, घी, चीनी, नींबू का रस

विधि - आटे में (थोड़ा पलोथन के लिये रख कर) 1/4 चम्मच नमक तथा 1 चम्मच घी मिलाकर पूरी के आटे की तरह गूंथ लें, इसकी 8 लोईयां बना लें। आलू को छील कर चूर लें, इसमें 1/2 च. नमक, लाल मिर्च, हरा धनिया, हरी मिर्च, चीनी व नींबू का रस मिला दें, इसके 8 हिस्से कर लें।

नोट : इसका तवे का पराठा भी बना सकते हैं।

स्वाद हेतु स्वयं खायें, कुछ कमी लगे तो ठीक करें, फिर परिवार को खिलाएं व परिवार से वाहि-वाहि लूटें।

माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति दिवस
महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको
हार्दिक शुभकामनाएँ

Jagdish Kabra
Mob.: 9890164710

Mitesh Kabra
Mob.: 9822206699

Rajendra Kabra
Mob.: 9822030959

Shree Traders

Damale Chambers, Hotel Pathik, Nehru Garden, Nashik,
Maharashtra, Bharat-422001 | Ph.: 0253-2504801 / 2508157

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति दिवस
महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको
हार्दिक शुभकामनाएँ

Mani Babu
Mob: 9414138691

BAL GOVINDAM
FROM PLAY GROUP TO Xth

Children Friendly Teachers Separate Play Ground
AIR CONDITIONED CLASS ROOMS WITH
AUDIO VISUAL TECHNIQUE

1. In Side Jassusar Gate, Near Rama Bhawan, Bikaner
2. Inside Jassusar Gate, Near Sbi Bank, Bikaner
3. Jawahar Nagar, Bikaner Email : Balgovindam@Yahoo.In

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जानिए कैसे बन सकते हैं? अच्छे अभिभावक

अक्सर आपने बहुत से लोगों को यह कहते सुना होगा कि अमुक व्यक्ति की बेटी एक अच्छे पद पर कार्यरत है और वह अपने मां-बाप और बड़ों का बहुत सम्मान करती है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि संतान का अच्छा या खराब होना इस बात पर भी निर्भर करता है कि बतौर माता-पिता आपने कैसी भूमिका निभाई। यदि आपने अपने बच्चे की परवरिश अच्छी तरह से की है तो उसे अच्छा बनना ही है। हालांकि अच्छा अभिभावक बनना भी एक चुनौती है, जिसे आपको स्वीकारना होगा।

प्रोत्साहित करें :

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि बच्चों की आलोचना करने से उनके दिलो-दिमाग पर खराब असर पड़ता है, जो माता-पिता अपने बच्चों की हरदम आलोचना करते हैं, उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि उनके ऐसा करने से बच्चों की गलत आदतों में कोई सुधार होने वाला नहीं है। यही नहीं बच्चे व्यर्थ में दूसरों की आलोचना करने लग जाते हैं, इसलिए बात-बात पर आलोचना करने की बजाय उसके द्वारा अच्छा काम करने पर उसे प्रोत्साहित करें।

ठीक नहीं है मारपीट

अक्सर ऐसा होता है कि बच्चे ने आपकी कोई बात नहीं सुनी तो आप चीख-चिल्लाकर अपना आक्रोश व्यक्त करने लगते हैं। अगर आपके मन में यह धारणा व्याप्त है कि बच्चे को मारने-पीटने से उसे नियंत्रण में रखा जा सकता है तो अपने मन से यह धारणा निकाल दें। मनोवैज्ञानिक डॉ.आशिका जुनेजा का कहना है कि बच्चे को मारने-पीटने से उसका स्वभाव नहीं बदला जा सकता, उसके स्वभाव में परिवर्तन के लिए जरूरी है कि उसे प्रेमपूर्वक समझाया जाए। बच्चे को प्रताड़ित करने से फायदे की बजाय नुकसान ही होता है। बच्चे को दंडित करने से उसके कोमल दिमाग में यह बात घर कर जाती है कि मारपीट से ही किसी समस्या का समाधान निकाला जा सकता है, मारपीट से उसके आत्मा सम्मान को भी चोट पहुंचती है।

अपनी इच्छाएं न थोपें

समझदार माता-पिता कभी भी अपनी इच्छाओं को बच्चे पर नहीं थोपते, कहने का मतलब यह है कि आप डॉक्टर या इंजीनियर बनना चाहती थीं, पर किन्हीं कारणों से ऐसा संभव नहीं हो पाया। अब आप यह सोच रही हैं कि मैं नहीं बन सकी तो मेरी बेटी ही बन जाए। डॉ.जुनेजा कहती हैं ऐसा सोचना गलत है। प्रत्येक बच्चा अपने आपमें असाधारण होता है। कोई गणित में तेज है तो कोई खेलकूद में। बच्चा जिस क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखा रहा है, उसमें ही उसे प्रोत्साहित करें। माता-पिता को यह बात याद रखनी चाहिए कि हर बच्चे में अलग-अलग खूबियां होती हैं। हमें इस बात को समझने का प्रयास करना चाहिए कि बच्चा वास्तव में क्या बनना चाहता है हम उन्हें विभिन्न विकल्पों के बारे में बता सकते हैं, यह बात उन पर निर्भर करती है कि वे किस विकल्प का चयन करते हैं। हां, अगर आपको महसूस होता है कि बच्चा विकल्प का चयन करने में गलती कर रहा है तो उसे समझाना आपका दायित्व है, ऐसा करने पर बच्चा और आपके मध्य एक स्वस्थ रिश्ता हमेशा बना रहेगा।

समय का विकल्प नहीं

आज के दौर में ज्यादातर माता-पिता कामकाजी होने के कारण बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते, उन्हें इस बात का अपराध बोध भी रहता है। ऐसे में ज्यादातर माता-पिता बच्चों को पर्याप्त समय न देने की भरपाई महंगे व मनपसंद गिफ्ट देकर करते हैं, ऐसा करने से बच्चों में अपनी बात मनवाने की आदत पड़ जाती है। वे जानते हैं कि माता-पिता पर हाल में उनकी इच्छा की पूर्ति करेंगे। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार ऐसा करना ठीक नहीं है। समय की भरपाई का कोई विकल्प नहीं हो सकता है।

आपको उसके लिए थोड़ा सा समय अवश्य निकालना चाहिए, जिससे बच्चे के मन में यह संदेश जाता है कि वयस्त होने के बावजूद आपको उसकी कितनी फिक्र रहती है।

माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति दिवस
महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको
हार्दिक शुभकामनाएँ

मनोज माहेश्वरी
अध्यक्ष लायंस क्लब कलूंगा, राउरकेला
Mob.: 7735777977

माहेश्वरी मार्केट, मेन रोड, राउरकेला,
जिला सुंदरगढ़, ओडिशा, भारत-७६९००१

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

माहेश्वरी समाज के वंसोउत्पत्ति दिवस
महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको
हार्दिक शुभकामनाएँ

गोविंद ईनाणी
Mob.: 9407677000
कार्यकारणी सदस्य अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा

MAHESHWARI TOURS AND TRAVELS

Srmig 17, Housing Board Colony, Bodhghat Road,
District Bastar, Jagdalpur, Chhattisgarh, Bharat-494001

पधारो म्हारे देश

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मेरा राजस्थान

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

राजस्थान का इतिहास
पहुँचाए आपके हाथ

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना

भारत का एक राज्य राजस्थान का एक जिला

1 प्रति ₹ 100/- **नागौर** 1 प्रति ₹ 100/-

के इतिहास की प्रति मंगवाने के लिए
संपर्क करें:- 022-28509999

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
'मेरा राजस्थान'
पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क १२००/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Remove 'INDIA' Name From The Constitution

RNI No. MAHHIN/ 2003/11570
Postal Registration No. MCN/113/2025-2027
WPP License No. MR/Tech/WPP-246/North/2025-27
License to post without prepayment'
Published on 28/05/2025 & Posting on 30th of every previous Month
at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

ADD Gel®
LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

24 SHADES

CALLIGRAPHY
GIFT OF CREATIVITY

Best Gift for Birthday

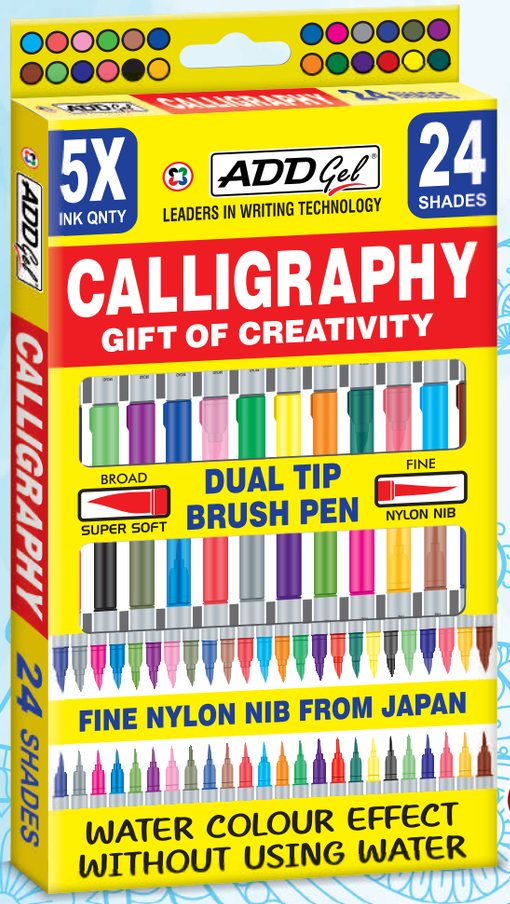

DUAL TIP BRUSH PEN

FINE NYLON NIB FROM JAPAN

BROAD
SUPER SOFT
FINE
NYLON NIB

MRP ₹450/- PER PACK

Make in India

www.shop.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400093 से मुद्रित करवाकर बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-022-4015 8094
अणुडाक - mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना - www.merarajasthan.co.in